



अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 40 अंक-43

कल्पादि सम्वत् 1972949116

सम्पादक

मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 01 फरवरी से 07 फरवरी 2017 तक

माघ शुक्ल पंचमी से माघ शुक्ल एकादशी सम्वत् 2073 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये

पृष्ठ संख्या 12

लोकतंत्र या
मोदीतंत्र..

पृष्ठ- 3

अस्थमा के
घरेलू..

पृष्ठ- 4

बसन्त पंचमी
जिनका...

पृष्ठ- 5

परिशिष्ट
नथूराम का..

पृष्ठ- 8

आखिर इतनी
लापरवाही...

पृष्ठ- 12

- सुरक्षा तंत्र को और मजबूत करने की जरूरत
- अखंड भारत के सपनों को साकार करने की दिशा में विदेश नीति में अभूतपूर्व परिवर्तन
- हिन्दू संस्कृति की विरासत का अभिमान रखने वाले अहिन्दू देश
- राष्ट्रघात का सजग प्रहरी सुदर्शन

जलीकट्टू पर प्रतिबंध लगाने के विरोध में यूनाइटेड हिन्दू फ्रंट ने किया जंतर-मंतर पर प्रदर्शन

● संवाददाता ●

नई दिल्ली स्थित जंतर-मंतर पर यूनाइटेड हिन्दू फ्रंट, अखिल भारत हिन्दू महासभा, राष्ट्रवादी शिवसेना सहित कई हिन्दू संगठनों ने जलीकट्टू पर लगे प्रतिबंध के विरोध में धरना-प्रदर्शन किया। धरना प्रदर्शन में अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा, राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी, राष्ट्रवादी शिवसेना प्रमुख जयभगवान गोयल सहित हिन्दूवादी संगठनों व यूनाइटेड हिन्दू फ्रंट के सैकड़ों कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। प्रश्नकारियों को संबोधित करते हुए चन्द्रप्रकाश कौशिक ने कहा कि अखिल भारत हिन्दू महासभा जलीकट्टू पर लगे प्रतिबंध के विरुद्ध है। जलीकट्टू पर जब तक केन्द्र सरकार अध्यादेश नहीं लाती है, तब तक विरोध जारी रहेगा। हिन्दू महासभा राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा ने कहा कि जलीकट्टू भारतीय संस्कृति का हिस्सा है। यह हिन्दुओं

शेष पृष्ठ 11 पर



सियाचिन ब्रेवहार्ट शहीद लांस नायक हनुमंथप्पा सेना मेडल से सम्मानित हनुमंथप्पा जैसे बहादुर सैनिकों पर देश को गर्व है—हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

सेना दिवस पर सेना प्रमुख बिपिन रावत ने सियाचिन में 35 फीट बर्फ के नीचे छह दिन तक जिंदगी और मौत के बीच संघर्ष करने वाले स्वर्गीय लांस नायक हनुमंथप्पा को सेना मेडल से सम्मानित करते हुए उनकी पत्नी को मेडल प्रदान किया साथ ही देश के लिए प्राण न्योछावर करने वाले जवानों के परिवार को अवार्ड दिया गया। दिल्ली के करियप्पा परेड ग्राउंड में सेना प्रमुख जनरल बिपिन रावत ने सेना दिवस के मौके पर अमर जवान ज्योति पर बलिदानी जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके बाद दिल्ली कैट में परेड की सलामी ली। साथ ही जवानों की विधवाओं को सेना मेडल और दूसरे पुरस्कारों से सम्मानित किया।

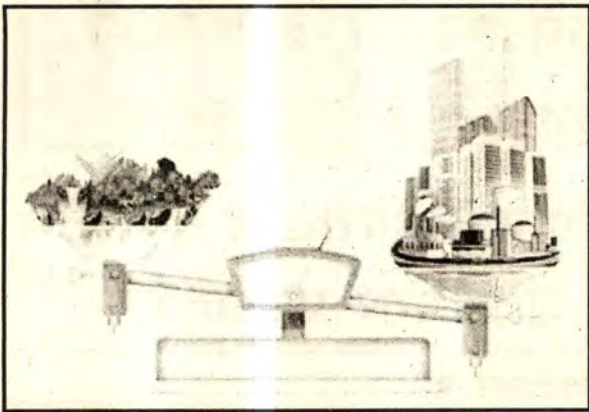


स्वर्गीय लांस नायक हनुमंथप्पा को सेना मेडल से सम्मानित किया गया उनकी धर्मपत्नी को यह मेडल दिया गया। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सेना के साहस को सलाम करते हुए जवानों और उनके परिवार को बधाई दी। सेनाप्रमुख के रूप में कार्यभार संभालने वाले जनरल बिपिन रावत ने भी इस अवसर पर सेना को शुभकामनाएं दी हैं। 66वां सेना दिवस के मौके पर प्रधानमंत्री मोदी ने जवानों की हिम्मत और जज्बे को सलाम करते हुए कहा कि हमारी सेना और हमारे बहादुर जवानों ने कुर्बानियां देकर हमेशा देश का सिर ऊंचा रखा है। जनरल बिपिन रावत ने कहा कि हम पड़ोसियों के साथ दोस्ती चाहते हैं, साथ ही किसी भी कार्रवाई का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए सेना तैयार है। बिपिन रावत ने कहा जम्मू-कश्मीर में हम हालात को सुधारने में कामयाब रहे हैं। भारत चीन के साथ शांति चाहता है। दोनों सेनाओं के आपसी सहयोग में सुधार आया है, मुझे यकीन है कि हमारे प्रतिद्वंद्वी हमारी ताकत को जानते हैं। गौरतलब है कि 1947 में भारतीय सेना पूरी तरह ब्रिटिश सेना से आजाद हो गई थी और फील्ड मार्शल के एम करिअप्पा आजाद भारत के पहले सेना प्रमुख बने थे। इससे पहले ब्रिटिश

शेष पृष्ठ 11 पर

पर्यावरण संरक्षण, हम सबके लिए बड़ी चुनौती

पेरिस समझौता जहां पर्यावरण के मोर्चे के लिए इतिहास में दर्ज हो गया वहीं २०१७ में दुनियाभर में खासकर भारत में जन-जन को इसके लिए आगे आना होगा। भारत में पर्यावरण को सबसे बड़ा खतरा वायु और जल प्रदूषण से है। इसकी सबसे बड़ी मार शहरों पर पड़ रही है। ऐसे में नए साल में इन दोनों ही समस्याओं के निदान के लिए सरकार के साथ-साथ आम लोगों को आगे आना होगा। दुनियाभर में ६० प्रतिशत लोग गंदी हवा में सांस लेने को मजबूर हैं। वायु प्रदूषण के चलते हर साल ३० लाख लोगों की मौत हो जाती है। एक अनुमान के अनुसार



विश्व भर में इसके चलते २२५ अरब डॉलर (१४,८५,००० करोड़ रु०) का आर्थिक नुकसान हो रहा है। यह रकम भारत

सरकार के सालाना आम बजट की तीन-चौथाई के बराबर है। डब्ल्यूएचओ के अनुसार हवा में पीएम २.५ की मात्रा २४ घंटे में अधिकतम २५ माइक्रोन प्रति घन मीटर और पीएम १० की मात्रा ५० माइक्रोन प्रति घन मीटर होनी चाहिए। हालांकि धरती पर अधिकांश लोगों को इतनी साफ-सुथरी हवा नसीब ही नहीं है। अगर राजधानी दिल्ली की स्थिति देखें तो यहां पीएम २.५ की मात्रा डब्ल्यूएचओ के मानकों की तुलना में कई गुना है। वहीं पीएम १० की मात्रा भी दिल्ली में निर्धारित मानकों से काफी अधिक है। वायु प्रदूषण की समस्या सिर्फ दिल्ली ही नहीं अन्य महानगरों में भी तेजी से बढ़ रही है। सिविल सोसाइटी, नेशनल ग्रीन टिब्यूनल, अदालत और सरकार ने इस दिशा में कदम भी उठाए हैं लेकिन अब भी काफी कुछ करने की जरूरत है। शहरों में पुराने डीजल वाहनों का परिचालन रोकने की बहस भी छिड़ी है लेकिन प्रदूषण फैलाने वाले डीजल वाहनों को स्थायी रूप से सड़कों से हटाने की दिशा में कोई ठोस पहल देखने को नहीं मिली है। ऐसे में दिल्ली, मुंबई, कानपुर, लखनऊ, पटना जैसे भारतीय शहरों को भी पेरिस, मैड्रिड, एथेंस और मेक्सिको सिटी जैसे शहरों की राह पकड़नी होगी जो डीजल कारों को २०२५ तक सड़कों से हटाने की घोषणा कर चुके हैं। वहीं जल प्रदूषण की रोकथाम की दिशा में भी कई चुनौतियां २०१७ में मुंह बाए खड़ी होंगी। सबसे बड़ी चुनौतियों नदियों को प्रदूषण से मुक्त करने की है। सरकार ने गंगा और उसकी सहायक नदियों को निर्मल बनाने के लिए महत्वाकांक्षी योजना नमामि गंगे शुरू की है। २०१७ में इस योजना को परवान चढ़ाने की चुनौती सरकार के समक्ष होगी। साथ ही यमुना को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए भी काम करना होगा। वहीं दुनियाभर की बात करें तो अमेरिका में नव निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की जलवायु परिवर्तन के संबंध में नीतियों पर पूरी दुनिया की नजर होगी। ट्रंप के शासन में अमेरिका जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौते से पीछे हटता है या अपनी प्रतिबद्धता निभाता है, इसका असर अन्य देशों पर भी पड़ेगा। भारत में पर्यावरण को वायु और जल प्रदूषण से सबसे बड़ा खतरा मैली होती जा रही नदियों को बचाना भी है बड़ी चुनौती इसके लिए कुछ कड़े और ठोस कदम हमारी केन्द्र और राज्य की सरकारों को जल्द उठाने होंगे।

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह कोई उपलब्धि पाने में देरी होगी जिसके कारण मन उदासीन हो सकता है। काम के अधिक बोझ के फलस्वरूप भी आप-अपने परिवार को समय दे पाने में सक्षम रहेंगे। यदि आपकी तरफ से कोई प्रयास होता है, तो मित्रों के साथ सम्बन्ध बेहतर होंगे।

वृष : कार्यक्षेत्र में आपके कनिष्ठ सहकर्मी आपको चुनौती दे सकते हैं। आप स्वयं को असुरक्षित महसूस करेंगे एवं निर्णय लेने में देरी करेंगे। अनजान व्यक्तियों से उचित दूरी बनायें रखें अन्यथा प्रतिष्ठा में कमी आ सकती है। अचानक घरेलू खर्चों में वृद्धि आ सकती है।

मिथुन : इस सप्ताह आपकी स्थितियों में सुधार होगा और विपरीत स्थितियां धीरे-धीरे स्वतः समाप्त होती जायेगी। आप भाग्यवश किसी कठिन समस्याओं से उबरेंगे। कोई व्यक्ति विशेष आपसे सहयोग की फरियाद कर सकता है। परिवार के खिन्न लोगों को मनाने का समय आ गया है।

कर्क : आपके पास अपार काम एवं जिम्मेदारियों की अधिकता रहेगी। पूर्व में किये गये वादे आपके लिए बोझ बन सकते हैं और आप उद्वेलित रहेंगे। कार्य की अधिकता से दबाव में न आयें अन्यथा संशयग्रस्त हो सकते हैं। निराश न हो समय के तीन पहर होते हैं।

सिंह : यह सप्ताह आपके लिए सामान्य रहेगा। मित्रों से नजदीकियां बढ़ेंगी। अन्तर ध्यान से मन को शान्ति मिलेगी। आपको परिजनों के साथ तालमेल बिठाने में कठिनाई महसूस होगी। धैर्य से स्थितियों में सुधार होगा। नई योजनाओं के लिए समय अनुकूल है।

कन्या : इस सप्ताह आपके कुछ सपने साकार होंगे। कार्यों में आखिरी क्षण सफलता प्राप्त होगी जिससे आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी। आदर्शवादी और साकारात्मक विचारधारा आपकी सफलता में काम आयेंगी। महिलाएं अपने मित्रों के साथ सहयोगात्मक रवैया अपनायें।

तुला : इस सप्ताह व्यवसाय व कार्यक्षेत्र में शक्ति व वर्चस्व की स्थिति कायम होगी। निराशा दूर होगी तथा नये तरीकों से कार्यों में प्रगति होगी। शारीरिक समस्याएं घरे रह सकती हैं। ऑफिस के कार्यों के लेकर अधीरता की स्थिति से गुजरेंगे।

वृश्चिक : इस सप्ताह कुछ लोगों को कार्य व व्यवसाय में महत्वपूर्ण फैसले लेने पड़ सकते हैं, जो आपके हित में साबित होंगे। आर्थिक मामलों में सूझबूझ से लिये गये निर्णय के फलस्वरूप अच्छे परिणाम मिल सकते हैं। लम्बे समय से चला आ रहा गतिरोध दूर हो सकता है।

धनु : इस सप्ताह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन के संकेत नजर आ रहें हैं। लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करें, समय-समय पर अधीरता की स्थिति बनेगी और हानि भी उठानी पड़ सकती है, अतः सावधानी अपेक्षित है।

मकर : इस सप्ताह आपको-अपने विचारों में स्वतन्त्रता लाने की आवश्यकता है। कुछ मुद्दों पर परिस्थितियों के अनुसार समझौतावादी रवैया अपनायें। अहंकार की भावना को त्यागकर अपने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करें।

कुम्भ : घटना व परिघटना जीवन का चक्र हैं प्रत्येक घटना जीवन पर एक अमिट छाप छोड़ जाती है। गुजरा हुआ कल बार-बार तंग कर सकता है। इससे छुटकारा पाने के लिए धर्म की शरण लेना हितकर रहेगा।

मीन : इस सप्ताह नयी योजनाओं को लेकर मन असमंजस की स्थिति में रह सकता है। इस समय तत्काल निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाने की जरूरत है। आपके व्यक्तित्व के कुछ नकारात्मक पहलू भी लोगों के सामने आ सकते हैं। अतः सोंच-समझकर कार्य करें।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

न च मां तानि कर्माणि निबन्धन्ति धनञ्जय।

उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु॥

हे अर्जुन! उन कर्मों में आसक्तिरहित और उदासीन के सदृश स्थित मुझ परमात्मा को वे कर्म नहीं बाँधते॥६॥

मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्।

हेतुनानेन कौन्तेय जगद्धिपरिवर्तते॥

हे अर्जुन! मुझ अधिष्ठाता के सकाश से प्रकृति चराचरसहित सर्व जगत् को रचती है और इस हेतु से ही यह संचारचक्र घूम रहा है॥१०॥

अवजानन्ति मां मूढा मानुषी तनुमाश्रितम्।

परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्॥

मेरे परमभाव को न जानने वाले मूढलोग मनुष्य का शरीर धारण करने वाले मुझ सम्पूर्ण भूतों के महान् ईश्वर को तुच्छ समझते हैं अर्थात् अपनी योगमाया से संसार के उद्धार के लिये मनुष्य रूप में विचरते हुए मुझ परमेश्वर को साधारण मनुष्य मानते हैं॥११॥

मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः।

राक्षसीमासुरी चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः॥

वे व्यर्थ आशा, व्यर्थ कर्म और व्यर्थ ज्ञानवाले विक्षिप्तचित्त अज्ञानीजन राक्षसी, आसुरी और मोहिनी प्रकृति को ही धारण किये रहते हैं॥१२॥

सुरक्षा तंत्र को और मजबूत करने की जरूरत



सुरक्षा, गोपनीयता, अनुशासन आदि कारणों से सैन्य क्षेत्र की आंतरिक गतिविधियां उजागर नहीं होती हैं। आमतौर पर देश के नागरिक समाज का ध्यान भी सेना पर तभी जाता है जब विपदा के वक्त रक्षा के लिए सैनिक मोर्चा संभाल लेते हैं। सीमाओं पर लगातार निगरानी हो या तनावपूर्ण माहौल के वक्त स्थिति संभालने का जिम्मा हो या राहत-बचाव कार्य की नौबत आए, सैनिक हर जगह तैनात मिलते हैं और देश इनके ही भरोसे चौक की नींद सोता है। हमें सुरक्षा देने वाले सैनिक खुद किस तरह का संघर्ष करते हैं, इसका अहसास समाज को नहीं होता है। घर-परिवार से दूर, हमेशा जोखिम भरी जिंदगी जीने पर किस तरह का मानसिक और शारीरिक तनाव होता होगा, इसका अनुमान भी हम नहीं लगा सकते। बेशक सैनिकों को इतना मजबूत बनने के लिए कड़ा प्रशिक्षण दिया जाता है, लेकिन कभी-कभी किसी सैनिक के विद्रोही होने की, या आत्महत्या करने जैसी खबरें आती हैं, तो उनके जीवन की कठिनाइयां समझी जा सकती हैं। जम्मू-कश्मीर में नियंत्रण रेखा पर तैनात सीमा सुरक्षा बल बीएसएफ के जवान तेजबहादुर यादव पोस्ट इस वक्त उससे सैनिकों में की ही झलक बीएसएफ की 26वीं जवान तेज बहादुर किया था कि सेना

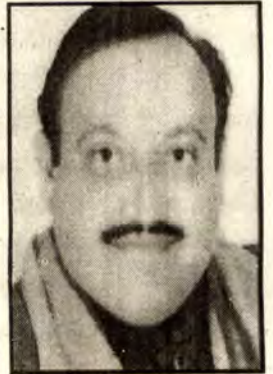
**राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष**

की जो फेसबुक चर्चा में हैं, बढ़ रहे तनाव मिलती है। बटालियन के यादव ने दावा के बड़

अधिकारी उनको मिलने वाला राशन बेच देते हैं। तेज बहादुर ने अपनी बात के पक्के सबूत देने के लिए कुछ वीडियो भी पोस्ट किए थे। उसमें उन्होंने उनको मिलने वाला खाना दिखाया था। इस वीडियो को लाखों लोगों ने देखा और हैरत व नाराजगी भरी प्रतिक्रिया जाहिर की। सेना के अधिकारियों ने आरोपों को गलत बताया और तेज बहादुर पर भी कई तरह के आरोप लगाए थे। अच्छी बात यह है कि जवान के आरोपों को सरकार ने एकदम दरकिनार नहीं किया और जांच के आदेश दिए। तेज बहादुर के अधिकारियों ने उनके दुर्व्यवहार, अनुशासनहीन होने की बात कही है। अगर ऐसा है तो क्या तेज बहादुर पर कोई दंडात्मक कार्रवाई की गई थी, यह भी बीएसएफ को बताना चाहिए। जिस खाने का वीडियो तेज बहादुर ने डाला है वो अकेले उन्हें तो नहीं मिलता होगा, पूरी बटालियन को मिलता होगा। वीडियो में जिस तरह की रोटी और दिखलाई गई है, वह सचमुच सैनिकों को परोसे जाने लायक नहीं लगती है। और जहां तक तेज बहादुर के अनुशासनहीन होने का सवाल है तो इसका संबंध उन्हें परोसे जाने वाले खाने से किस तरह से है, यह भी अधिकारियों को बताना चाहिए। शुद्ध और पौष्टिक आहार, सम्मान से प्राप्त करना हर मनुष्य का अधिकार है, इसका हनन अगर हो रहा है, तो यह बेहद चिंतनीय है। यह अक्सर देखा गया है कि सेना के भीतर का भ्रष्टाचार तभी सामने आता है, जब कोई बड़ी घटना होती है। अक्सर तो देश की सुरक्षा का हवाला देकर छोटी-मोटी गड़बड़ियां दबा दी जाती हैं और सेना के लिए नकारात्मक बातों को सीधे देशप्रेम से जोड़ दिया जाता है। यह रवैया सही नहीं है। यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि अन्य क्षेत्रों की तरह सेना में भी भ्रष्टाचार हो सकता है और उसे दूर करने की कोशिश होनी चाहिए। क्योंकि सेना का भ्रष्टाचार सीधे सुरक्षा के लिए खतरा हो सकता है। एक अंग्रेजी अखबार की खबर के मुताबिक श्रीनगर में सुरक्षा बलों के कैम्प के आस-पास रहने वाले लोगों ने खुलासा किया है कि सेना के कुछ अधिकारियों से उन्हें बाजार से आधी दर में सामान मिल जाता है। पेट्रोल, डीजल के साथ-साथ खाने के कुछ सम्मान भी आधी कीमत में मिल जाते हैं। खाने के सामान में चावल, मसाले जैसी चीजें शामिल हैं। इसके साथ-साथ सब्जियां तक कैम्प के पास रह रहे लोगों को सस्ते में बेच दी जाती हैं। अगर इस बात में सच्चाई है तो तेज बहादुर के आरोप निराधार नहीं लगते। बीएसएफ अधिकारी इस बात पर फिक्रमंद हैं कि तेज बहादुर तक मोबाइल फोन कैसे पहुंचा। जिस तरह से बीएसएफ जवानों को मिलने वाले खाने का वीडियो प्रसारित हुआ है, वैसे ही संवेदनशील सूचनाओं के प्रसारित होने का भी खतरा है। जवानों के भोजन में गड़बड़ी की जांच के साथ-साथ व्यवस्थागत सारी कमजोरियों की जांच अब होनी चाहिए, ताकि सुरक्षा तंत्र मजबूत हो।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

लोकतंत्र या मोदी तंत्र



ढाई साल के मोदी राज में देश किस दिशा में जाता रहा है, यह प्रश्न पूछने का समय अब आ गया है। यह महसूस हुआ है कि कोई प्रधानमंत्री है और धमाकेदार है, जबकि उसके पहले के दस वर्षों में यह पता लगाना पड़ता था कि प्रधानमंत्री कौन है। उन दिनों नीतियां कौन बना रहा था और उन्हें कौन लागू कर रहा था, यह बताना भी आसान नहीं था लेकिन, अब तक प्रधानमंत्री मोदी की कार्यपद्धति ऐसी रही है कि भारतीय लोकतंत्र, अब मोदीतंत्र में बदलता दिख रहा है। इसके फायदे भी हैं और नुकसान भी हैं। ऐसा नहीं है कि केवल इसके नुकसान ही हैं, कुछ फायदे भी हैं। जब प्रधानमंत्री शक्तिशाली होता है तो नौकरशाही उससे खौफ खाती है और मुस्तैदी से काम करती है। प्रधानमंत्री यदि ईमानदार हो तो मंत्रियों को भ्रष्टाचार करते वक्त डर लगता है। प्रधानमंत्री के पांच साल तक जमे रहने की संभावना के कारण सरकार में स्थायित्व आ जाता है। पिछली लगभग आधा दर्जन सरकारें या तो स्पष्ट बहुमत की सरकारें नहीं थीं या डेढ़-दो वर्ष में ही लुढ़क गईं। इस दृष्टि से मोदी सरकार देश के लिए अत्यंत हितकर सिद्ध हो सकती थी। मोदी की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वे अपनी बात लोगों के गले उतारने में सिद्धहस्त हैं। उन्होंने अब तक जितनी जन-सभाएं कीं, उतनी प्रायः अन्य प्रधानमंत्रियों नहीं करते हैं। लेकिन चिंता की बात यह भी है कि देश का सारा ध्यान एक ही व्यक्ति पर केंद्रित होता जा रहा है। सारी व्यवस्था कार्यक्रम केंद्रित होने हो रही है। यह न तो और न उस शुभ है। लोकतंत्र के प्रक्रिया इतनी सूक्ष्म, अदृश्य होती है कि से नहीं जाता। संसदीय को बराबर वालों में

**राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव**

प्रथम प्रिंस एंटर पेरेस माना जाता है, जैसा कि ब्रिटिश प्रधानमंत्री होता है। अमेरिकी राष्ट्रपति की तरह वह अपने मंत्रिमंडल का स्वामी नहीं होता है। आज भारत के मंत्रिमंडल की स्थिति क्या है, सरकार की प्रमुख नीतियों पर मंत्रिमंडल में खुलकर बहस होती हो, इसके कोई संकेत नहीं मिलते। यदि बहस होती रहती तो नोटबंदी जैसे कदम को क्या हरी झंडी मिल सकती थी। इसी प्रकार सीमांत पर की गई कथित सर्जिकल स्ट्राइक भी किसी नौकरशाह के दिमाग के उपज रही होगी। यह सर्जिकल स्ट्राइक रोज फर्जिकल स्ट्राइक सिद्ध हो रही है। हमारे सौ से ज्यादा जवान पाकिस्तान ने मार गिराए हैं और दर्जनों स्थानों पर घुसकर उसने पलट सर्जिकल स्ट्राइक कर दी है। क्या सर्जिकल स्ट्राइक करने के पहले प्रधानमंत्री ने अपने साथी मंत्रियों और सामरिक विशेषज्ञों से कोई सलाह की। इसके कारण पाकिस्तान के साथ हमारा युद्ध भी हो सकता था। क्या हमारी सरकार उसके लिए तैयार थी। नीति-निर्माण का काम व्यक्ति-केंद्रित होने का यही सबसे बड़ा खतरा है। इस तरह के काम का एक उदाहरण और भी है। काबुल-यात्रा पर गए प्रधानमंत्री अचानक पाकिस्तान चले गए, नवाज शरीफ की नातिन की शादी में भाग लेने। विदेश मंत्रालय को इसकी कोई जानकारी नहीं थी। उसके हफ्ते भर बाद ही पठानकोट में आतंकी हमला हो गया। बिना सोचे-विचारे निर्णय करना और भाववेश में बहकर नीति-निर्माण करने वाली संस्थाओं की उपेक्षा करना व्यक्ति-केंद्रित शासन का विशेष लक्षण होता है। नोटबंदी का अत्यंत महत्वपूर्ण वित्तीय फैसला रिजर्व बैंक को करना चाहिए था लेकिन मोदी ने उस पर अपना यह फैसला थोप दिया। ऐसी कार्रवाइयों से देश की स्वायत्त संस्थाओं की प्रतिष्ठा पर आंच भी आती है और गलत निर्णय भी होते हैं। जब शासन व्यक्ति केंद्रित हो जाता है तो गलत निर्णयों को सही ठहराने की जिद ठान ली जाती है। उससे सरकार और जनता का भारी नुकसान होता है। यह स्वागत योग्य है कि मोदी ने भाजपा की कार्यकारिणी के अधिवेशन में पारदर्शिता का प्रश्न उठाते हुए कहा कि लोगों को यह पूछने का अधिकार है कि भाजपा के पास पैसा कहां से आता है और उसका हिसाब क्या होता है। ऐसी अटपटी बात आज तक किसी प्रधानमंत्री या पार्टी अध्यक्ष ने नहीं कही। यदि मोदी सचमुच नेता हैं और उनमें दम है तो वे अपनी पार्टी के सारे हिसाब को सार्वजनिक क्यों नहीं कर देते। लेकिन, ऐसे कदम प्रायः अपनी छवि चमकाने के लिए होते हैं। पार्टी के आंतरिक लोकतंत्र का सवाल भी बड़ा महत्वपूर्ण है। क्या कभी भाजपा में प्रधानमंत्री और भाजपा अध्यक्ष ऐसे दो व्यक्ति रहे हैं, जो एक ही राज्य मंत्रिमंडल के ऊपर-नीचे सदस्य रहे हों। अमित शाह को अध्यक्ष पद थमा देने से भाजपा एक अर्थ में बहुत ही संकीर्ण-नियंत्रण वाली पार्टी बन गई है। वह पहले से अधिक व्यक्ति-केंद्रित और रबर-ठप्पा पार्टी बन गई है। पार्टी की कार्यकारिणी में किसी ने नोटबंदी की दो-टूक समीक्षा की हो और जनता के दुख-दर्दों को गुंजाया हो, ऐसा नहीं सुना गया। बल्कि उल्टा हुआ। पार्टी ने मोदी की विरुदावलियां गाईं। इसी का परिणाम है कि राज्यों के चुनावों में किसी प्रांतीय नेता को नहीं चमकने दिया जाता है। दिल्ली और बिहार में भाजपा के पास कोई मुख्यमंत्री का उम्मीदवार ही नहीं था और उत्तर प्रदेश में भी नहीं है। प्रधानमंत्री भी वही हैं और भावी मुख्यमंत्री की भूमिका भी वही निभा रहे हैं। यही हाल विदेशी दौरो का है। प्रतिभाशाली विदेश मंत्रीजी घर में बैठी मक्खियां मार रही हैं और प्रधानमंत्री विदेश घूमने का कोई मौका नहीं चूक रहे हैं। अब खादी के विज्ञापनों में गांधी की जगह मोदी आ गए हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने सहारा-बिड़ला डायरियों को रद्द कर दिया, जबकि दिल्ली वि०वि० की १६७८ की डिग्रियों की जांच की मांग करने वाले सूचना अधिकारी का मंत्रालय ने तबादला कर दिया। लोकतंत्र के लिए शुभ शकुन नहीं हैं।

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

अस्थमा रोग सभी मौसम में बहुत पीड़ित करता है लेकिन बारिश के मौसम में नमी के कारण अस्थमा रोगी की परेशानियाँ बढ़ जाती हैं। वातावरण अधिक आर्द्र (गीला) हो जाने से अस्थमा रोगी को श्वास लेने में बहुत कठिनाई होती है। कमरे में बैठे रोगी श्वास लेने के लिए खिड़की, दरवाजे की तरफ दौड़ता है और अंदर की आर्द्र वायु में उसे श्वास लेने में बहुत कठिनाई होती है। ऐसी स्थिति में रोगी की व्यथा अधिक बढ़ जाती है। नगरों में सड़कों पर चलने वाले वाहनों के धुएँ व गैस से वातावरण पहले से प्रदूषित होता है। बारिश में धुंध के कारण प्रदूषित वायु घरों के आसपास फैलकर अस्थमा रोगियों के लिए भारी कठिनाई उत्पन्न कर देती है।

धुंध के कारण वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा कम हो जाने से रोगी की पीड़ा बढ़ जाती है। बारिश के दिनों में आकाश पर बादल छाने के साथ ही श्वास लेने में कठिनाई होने लगती है। ऐसे में धूल-मिट्टी व धुएँ के सूक्ष्म कण श्वास के साथ फेफड़ों में पहुँचते हैं तो श्वास व खाँसी का प्रकोप शुरू हो जाता है। जोर-जोर से खाँसने पर जब कफ नहीं निकल पाता है तो रोगी की घबराहट अधिक बढ़ जाती है। अस्थमा रोगी को श्वास लेने से ज्यादा श्वास छोड़ने में कठिनाई होती है क्योंकि रोगी जब पूरा श्वास नहीं छोड़ पाता है तो उसे

बहुत घबराहट होती है। उसे श्वास रुकता हुआ अनुभव होता है।

अस्थमा रोग की घरेलू चिकित्सा : अस्थमा रोग में अधिकांश स्त्री-पुरुष मलावरोध अर्थात् कब्ज से अधिक पीड़ित होते हैं। आयुर्वेदाचार्य के अनुसार किसी रोग में मलावरोध के चलते कोई भी औषधि लाभ नहीं पहुँचाती है। अस्थमा रोग में मलावरोध को नष्ट करके घरेलू चिकित्सा करनी



चाहिए। मलावरोध नष्ट करने के लिए रोगी को 3-5 ग्राम में त्रिफला चूर्ण दूध के साथ सेवन करना चाहिए। त्रिफला चूर्ण हरड़, बहेड़ा और आँवला से बनाया जाता है। जावित्री का एक ग्राम चूर्ण पान में बराबर सेवन करने से अस्थमा रोग का प्रकोप कम होता है। नागर मोथा, हरड़ और सोंठ 90-90 ग्राम मात्रा में लेकर कूट-पीसकर बारीक चूर्ण बनाकर, गुड़ के साथ खरल में घोट कर छोटी-छोटी गोलियाँ बनाकर छाया में सूखाकर काँच की शीशी

अस्थमा के घरेलू उपचार

शशिभूषण शलभ

में रखें। दिन में एक-एक गोली चूसने से अस्थमा कम होता है और खाँसी का प्रकोप भी कम होता है। आँवला, पिपली और सोंठ 90-90 ग्राम मात्रा में लेकर बारीक चूर्ण बनाकर रखें। 3-3



ग्राम चूर्ण, मधु और खाण्ड मिलाकर, दिन में दो-तीन बार सेवन करने से अस्थमा रोग में बहुत लाभ होता है। शुद्ध कुचला और काली मिर्च बराबर मात्रा में लेकर खरल में दूध के साथ घोटकर, शुष्क होने पर छोटी-छोटी गोलियाँ बनाकर रखें। 9-9 गोली सुबह-शाम शुद्ध घी के साथ सेवन करने से अस्थमा का प्रकोप कम होता है।

अस्थमा में खाँसी का प्रकोप अधिक होने पर मोर के पंखों के ऊपरी भाग की रस बनाकर, 9-9

रस्ती भस्म पान में भरकर खाने से खाँसी का प्रकोप शांत होता है। पिपली और सेंधा नमक बराबर मात्रा में लेकर कूट-पीसकर बारीक चूर्ण बनाकर 3-3 ग्राम चूर्ण अदरक के रस के साथ सुबह और रात्रि के समय सेवन करने से अस्थमा का प्रकोप नष्ट होता है। बच्चों को अस्थमा होने पर तुलसी के पाँच ताजे पत्ते धोकर, बारीक पीसकर मधु मिलाकर चटाने से अस्थमा का प्रकोप कम होता है। दिन में दो-तीन बार चटा सकते हैं। अदरक का रस 5 ग्राम और मधु 3 ग्राम मिलाकर दिन में दो-तीन बार चाटकर सेवन करने से अस्थमा का प्रकोप कम होता है। अस्थमा का दौरा पड़ने पर हींग 90 ग्राम और कूपर 90 ग्राम मिलाकर खरल में घोट कर गोलियाँ बनाकर रखें। 9-9 गोली चूसने से अस्थमा का प्रकोप शांत रहता है। गज पिप्पली का एक ग्राम चूर्ण पान में रखकर खाने से अस्थमा का प्रकोप शांत रहता है। सेंधा नमक को बारीक पीसकर, उसमें शुद्ध घी मिलाकर रोगी की छाती पर मलने से अस्थमा रोगी को बहुत लाभ होता है।

काँच के बीजों को कूट-पीसकर बारीक चूर्ण बनाकर दो-दो ग्राम चूर्ण शुद्ध घी और

मधु मिलाकर, दिन में दो-तीन बार चाटने से रोग ठीक होता है। शुद्ध घी और मधु अलग-अलग मात्रा में मिलाना चाहिए। अतीस और पोहकर को बराबर मात्रा में लेकर, कूटकर बारीक चूर्ण रखें। 3-3 ग्राम चूर्ण मधु मिलाकर दिन में दो-तीन बार चाटकर सेवन करने से बहुत आराम मिलता है। अलसी और गोरख मुण्डी को बराबर मात्रा में लेकर, कूटकर बारीक चूर्ण बनाकर तीन-तीन ग्राम चूर्ण दिन में दो बार सेवन करने से बहुत लाभ होता है। मधु के साथ सेवन कर सकते हैं। किसी बड़े बर्तन में जल को उबालकर, कुछ ठंडा होने पर उसमें पाँव डालकर बैठने से अस्थमा का प्रकोप कम होता है। सोंठ, हल्दी और काली मिर्च के दाने बराबर-बराबर मात्रा में लेकर कूट-पीसकर बारीक चूर्ण बनाएँ। दो-दो ग्राम चूर्ण हल्के गरम जल के साथ सुबह-शाम सेवन करने से अस्थमा रोग में बहुत लाभ होता है। पुनर्नवा की जड़ को छाया में सुखाकर कूटकर बारीक चूर्ण बनाएँ। तीन ग्राम पुनर्नवा के चूर्ण में दो ग्राम हल्दी मिलाकर हल्के गरम पानी से दिन में दो बार सेवन करने से बहुत आराम मिलता है। इन्द्रायण के फलों को कूटकर रस निकालें। 20 बूँदें रस हल्के गरम जल में मिलाकर पीने से श्वास और खाँसी का प्रकोप नष्ट होता है।

आहार-विहार : अस्थमा रोगी के लिए आहार-विहार का बहुत महत्त्व है। बाहर निकलते समय मुँह पर कपड़े की पट्टी लगाकर जाने से श्वास लेने की परेशानी कम होती है। अस्थमा के रोगी को कई शीतल खाद्य पदार्थ या पेय सेवन नहीं करना चाहिए। गाजर, मूली, अरबी, घी, तेल से बने व्यंजनों से बचना चाहिए। फास्ट-फूड व चाइनीज खाद्य पदार्थों व डिब्बा बंद चीजों का सेवन नहीं करना चाहिए। शीत ऋतु में पर्याप्त गरम कपड़े पहनकर बाहर निकलना चाहिए। रोगी को सिर ढक कर रखना चाहिए। जहाँ तक संभव हो चाय, कॉफी व हल्के गरम जल का सेवन करने से अस्थमा के प्रकोप से सुरक्षित रहा जा सकता है।

प्याज पहचाने कैंसर सेल

नि.जि. डेस्क

प्याज का नाम सुनते ही बहुत से लोगों के मुँह का जायका खराब हो जाता है। खाने वाले शायद ही प्याज की खासियत पहचानते हो, लेकिन अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी (एमयू) के वैज्ञानिकों ने इसकी कीमत पहचान ली है। शोध टीम ने नैनो तकनीक के जरिए प्याज में ऐसा तत्व खोज निकाला है, जो शरीर में कैंसर कोशिकाओं की पहचान करने में कारगर है। टीम ने अपनी विधि का पेटेंट भी करा लिया है। अब व्यापक इस्तेमाल पर प्रयोग चल रहा है।

प्याज में फाइटो मॉलीक्यूल होते हैं। इनकी कीमत को एएमयू के एप्लाइड फिजिक्स डिपार्टमेंट के तहत चल रहे सेंटर ऑफ

एक्सीलेंस मैटेरियल साइंसेज (नैनो मैटेरियल्स) के वैज्ञानिकों ने पहचाना। सेंटर के प्रिंसिपल कोऑर्डिनेटर, प्रो. आलिम एच. नकवी, एप्लाइड फिजिक्स के चेयरमैन प्रो. शकील खान, डॉ. एम. वसी खान व डॉ. ब्रजराज सिंह ने नैनो तकनीक के जरिये फाइटो मॉलीक्यूल में सिल्वर साइट मिश्रित करके सिल्वर नैनो क्लस्टर (एसएनएस) बनाने की विधि विकसित की है। अभी तक सिल्वर नैनो क्लस्टर रसायनों के जरिये बनाए जा रहे थे। एएमयू के वैज्ञानिकों का न सिर्फ तरीका आसान है, बल्कि साइड इफेक्ट रहित भी है। शोध टीम ने सवा साल की मशक्कत के बाद यह कामयाबी हासिल की है।

खोजेगा कैंसर सेल : शोध टीम के मुताबिक सिल्वर नैनो क्लस्टर में ऑप्टिकल व फ्लोरोसेंस के विशेष गुण होते हैं। इनका द्रव रूप में इस्तेमाल करने पर शरीर



में मौजूद कैंसर सेल का प्राथमिक अवस्था में ही पता लगाया जा सकेगा। इससे एंटी बायोटिक रेजिस्टेंट व ह्यूमन कैंथोजनिक माइक्रोब्स को भी कंट्रोल किया

जा सकेगा।

ऐसे करेगा काम : प्याज से तैयार सिल्वर नैनो क्लस्टर पानी में घुलनशील है। शरीर में पहुँचते ही ये कैंसर सेल से जुड़ जाता है। शोध टीम के मुताबिक ऐसी कोशिकाओं को बायोइमेजिंग के जरिये देखा, पहचाना जा सकता

है। दरअसल, एसएनएस इन कोशिकाओं को रंगीन बना देता है। चिह्नित कैंसर सेल को फोटो डायनेमिक थेरेपी से खत्म किया जा सकता है। टीम के मुताबिक सीएनसी का आकार मात्र 3000-8000 अणुओं के बराबर है। नैनो तकनीक के जरिये तैयार तत्वों के मुकाबले सीएनसी के अत्यधिक छोटा होने से इसका

शेष पृष्ठ 11 पर

शाहजहाँ के शासन काल की बात है। स्यालकोट के एक छोटे से मदरसे में हकीकत राय पढ़ता था। मौलवी वहाँ पर बच्चों को पढ़ाया करते थे। एक दिन मौलवी कहीं बाहर गए हुए थे तो उनकी अनुपस्थिति में बच्चे खेलने-कूदने लगे, लेकिन हकीकत राय इस खेल में शामिल नहीं हुआ। इस बात पर दूसरे बच्चों ने उसे छोड़ा। एक मुसलमान बच्चे ने हकीकत राय को गाली दी, दूसरे ने हिन्दुओं को, और तीसरे ने हिन्दुओं के देवी-देवताओं को भगवती दुर्गा को। इस बात पर हकीकत राय का खून खौल उठा। वह बोला यदि मैं भी यही शब्द तुम्हारी बीवी फातिमा के लिए कहूँ तो? मुसलमान बालक ने कहा, तू ऐसा बोल कर दिखा। हकीकत राय ने वही शब्द बीवी फातिमा के लिए कह दिए। चारों तरफ सन्नाटा छा गया। कुछ देर बाद मौलवी साहब लौटे तो मुसलमान बच्चों ने नमक मिर्च

लगाकर सारी घटना उन्हें सुनाई। मौलवी ने हकीकत से पूछा कि क्या सच में उसने ऐसा किया? हकीकत ने कहा हाँ, लेकिन पहले उन्होंने माँ भगवती के बारे में अपशब्द कहे थे। मौलवी का चेहरा तमतमा उठा। उन्होंने इस्लाम की तौहीन का यह मामला स्यालकोट के हाकिम अमीर बेग की अदालत में भेज दिया। वहाँ भी हकीकत डरा नहीं, उसने पूरी घटना स्पष्ट बता दी। हाकिम ने मुल्लाओं की राय ली, उन्होंने बताया कि इस्लाम की तौहीन करने वाले को शरीयत के मुताबिक मौत की सजा मिलनी चाहिए। हकीकत राय उस समय महज १३ वर्ष का था। हकीकत राय का बूढ़ा बाप यह सुनकर रो पड़ा। उसकी माँ बेहोश हो गई।

हकीकत को जेल में डाल दिया गया। अगली सुबह उसे भरे मैदान में लोगों के सामने मौत की सजा दी जानी थी। कुछ मुल्ला और काजी हकीकत के

बसंत पंचमी पर जिनका बलिदान दिवस है वह है वीर बालक हकीकत राय



पिता को साथ लेकर जेल में पहुँचे। उन्होंने उससे कहा, यदि तुम इस्लाम कबूल कर मुसलमान बन जाओ तो तुम्हारी सजा माफ कर दी जाएगी। इसके अलावा तुम्हें इनाम भी दिया जाएगा। हकीकत के बूढ़े पिता ने भी रोते हुए उससे कहा कि बेटा तू मुसलमान बन जा, कम से कम तू

जिंदा रहेगा तो हम तुझे देखकर जी तो लेंगे। हकीकत का चेहरा तमतमा उठा। उसने कहा कि पिताजी आप भी यही कहने लगे। मुसलमान बनने के बाद क्या मुझे मौत नहीं आएगी। कुछ दिनों के जीवन के लिए धर्म छोड़ने का क्या मतलब है? हकीकत राय ने काजी की आँख में आँख डालकर कहा—काजी साहब, धर्म कभी बदला नहीं जाता, वह तो अटल होता है। वह जीवन भर हमारे साथ रहता है और मरने पर हमारे साथ ही जाता है। अगली सुबह हकीकत को काजी के सामने लाया गया। पूरा मैदान मुसलमानों और हिन्दुओं की भीड़ से खचाखच भरा हुआ था। हकीकत राय से काजी ने एक बार फिर कहा कि वह इस्लाम

कबूल कर लेगा तो उसकी जान बख्श दी जाएगी, लेकिन हकीकत राय अपनी बात पर अडिग रहा। काजी ने जल्लाद को उसकी गर्दन काटने का हुक्म दिया। हकीकत राय ने खुद अपनी गर्दन झुका दी, १३ वर्ष के बच्चे की गर्दन काटने के लिए जब जल्लाद ने तलवार उठाई तो उसके हाथ काँप उठे, तलवार हाथों से छूटकर नीचे गिर पड़ी। हकीकत राय ने खुद तलवार उठाई और जल्लाद से कहा, घबराओ मत जो तुम्हारा कर्तव्य है वह पूरा करो। जल्लाद ने तलवार उठाई और हकीकत राय की गर्दन काट दी। अपने धर्म के लिए प्राण न्यौछावर करने वाले इन वीर सपूतों के कारण ही हमारा देश सबसे महान है।

पांचजन्य से साभार

वसन्त पंचमी (माघ शुदि पंचमी)

साभार-आर्य पवपद्धति

है ऋतुराज का आगमन, जल-थल में छवि आई है।
प्रकृति देवी नवल रंगमंच पर आई है।।
विरस द्रमों ने नवल दलों से निज शृंगार बनाया है।
मानो श्री वसन्त स्वागत हित रुचि वितान बनाया है।।
कुसुमभार का हार पहन कर मतवाले से झूम रहे।
कभी-कभी वे अनुरागवश अविनि चरण को चूम रहे।।
सरल रसाल साल में मञ्जुल पीतममञ्जरी आई है।
सरसों सुमन पीत भूतल में पीताम्बर छवि छाई है।।
चित्र-विचित्र वेश भूषा में चित्रित मन हो जाता है।
नीरस हृदयों में सहसा ही, प्रेम बीज बो जाता है।।
श्री ऋतुराज राज की लक्ष्मी नये ढंग से आती है।
'श्रीहरि' विश्व-रंगशाला में नये रंग दिखलाती है।।

कविशिरोमणि श्रीहरि

शीत के आतंक का अपसार हो चला है, जराजीर्ण खत्वाट यष्टिधारी शिशिर का बहिष्कार करते हुए सरस वसन्त ने वन और उपवन में ही नहीं, किन्तु वसुधा भर में सर्वत्र अपने आगमन की घोषणा कर दी है। सारी प्रकृति ने वसन्ती बाना पहन लिया है। खेतों में सरसों फूल रही है। जहाँ तक दृष्टि दौड़ाइये, मानो पीतता सरिता की तरंगावली नेत्रों का आतिथ्य करती है, वनों में टेसू (पलाश-पुष्पों) की सर्वत्रव्यापिनी रक्ताभा दर्शनीय है। उपवन गेंदे और गुलदाऊदी की पुष्पावली के पीतपरिधान धारण किये हुए हैं, नगर और ग्राम में बाल-बच्चे वसन्ती वस्त्रों से सजे हैं। मन्द सुगन्ध मलय समीर सर्वत्र बह रहा है। ऋतुराज वसन्त के इस उदार अवसर पर इतने पुष्प खिलते हैं कि वायुदेव को उनकी गन्ध के भार से शनैः-शनैः सरकना पड़ता है। इस समय उपवनों में चारों ओर पुष्पों की शोभा नयनों को आनन्द देती है। जिधर देखिये उधर ही रंग-बिरंगे फूल खिल रहे हैं। कहीं गुलाब अपनी बहार दिखा रहा है तो कहीं गुले अब्बास के पंचरंगे फूल आँखों को लुभा रहे हैं। कहीं सूर्यप्रिया सूर्यमुखी सूर्य को निहार रही है, कहीं श्वेत कुन्द की कलियाँ दौलत दिखा कर हँस रही हैं। गुलेलाल अपने गुलाबी पुष्पों के ओठों से मुस्कुरा रहा है। कमल अपने पुष्पनेत्रों से प्रकृति-सौन्दर्य को निहार रहा है। आम्रपुष्पों (बौरों) की छटा ही कुछ निराली है। उन पर भौरों की गूँज और शाखाओं पर बैठी कोयल की कूक उसकी शोभा को द्विगुणित कर देती है। आम के बौरों में कुछ ऐसी मदमाती सुगन्ध होती है कि

वह मन को बलात् अपनी ओर खींच कर मोद से भर देती है। आयुर्वेद के सिद्धान्तानुसार इस ऋतु में स्थावरों (वनस्पतियों) में नवीन रस का संचार ऊपर की ओर होता है। जंगमों के शरीरों में भी नवीन रुधिर का प्रादुर्भाव होता है जो उनमें उमंग और उल्लास को बढ़ाता है। वसन्त ऋतु तो चैत्र और वैशाख में होती है। 'मधुमाधवौ वसन्तः स्यात्' यह वचन इसका पोषक प्रमाण है। किन्तु प्रकृति देवी का यह समारोह ऋतुराज वसन्त के लिए ४० दिन पूर्व से ही प्रारम्भ हो जाता है। जब प्रकृति देवी ही सर्वतोभावेन ऋतुनायक के स्वागत में तन्मय है तो उसी के पञ्चभूतों से बना हुआ रसिक शिरोमणि मनुष्य वसन्त के शुभागमन से किस प्रकार बहिर्मुख रह सकता है। फिर वनोपवनविहारी भारतवासी तो प्राकृतिक-शोभा में स्वर मिलाने में और भी प्राचीन काल से प्रवीण रहे हैं। वे इस अवसर पर आनन्द अनुभव से कैसे वंचित रह सकते थे। प्राचीन भारतीयों ने इस उदार ऋतु का आनन्द मनाने के लिए वसन्त पञ्चमी के पर्व की रचना की।

यह समय ही कुछ ऐसा मोदप्रद और मार्दक होता है कि वायुमंडल मद और मोद से



भर जाता है, दिशाएँ कलकण्ठा कोकिला आदि विविध विहंगमों के मधुर आलाप से प्रतिध्वनित हो उठती हैं। क्या पशु, क्या पक्षी और क्या मनुज सब का हृदय आह्लाद से उद्वेलित होने लगता है, मनो में नई-नई उमंगें उठने लगती हैं। भारत के अन्नदाता किसान अपने अहर्निश के परिश्रम को आसन्न आषाढ़ी (साढ़ी) उपज सस्य के रूप में सफल देखकर फूले अंग नहीं समाते।

उनके गेहूँ और जौ के खेतों की नवाविर्भूत बालों से युक्त लहलहाती हरियाली उनकी आँखों को तरावट और चित्त को अपूर्व आनन्द देती है, कृषि के सब कार्य इस समय समाप्त हो जाते हैं। अतः कृषि-प्रधान भारत को इस समय आमोद-प्रमोद और राग-रंग की सूझती है। माघ सुदि वसन्त पञ्चमी के दिन से उसका प्रारम्भ होता है। भारत के ऐश्वर्य-शिखर पर आरुढ़ता और विलास-सम्पन्नता के समय पौराणिक काल में इस अवसर पर मदन-महोत्सव मनाया जाता था।

संस्कृत साहित्यज्ञ जानते हैं कि भारतवासी सदा से कविता के वातावरण में विहार करते रहे हैं और कविता प्रतिक्षण कल्पना के वाहन पर विचरती रहती है। इसलिए शायद ही कोई भाव बचा हो जिसका काल्पनिक चित्र भारतीय कवियों ने न रचा हो।

आर्य पुरुषों को उचित है कि वे कामदाहक महापुरुषों के उत्तम उदाहरण को सदा अपने सामने रखते हुए मर्यादातिक्रमणकारी कामादि विकारों को किसी ऋतु में भी अपने पास तक न फटकने दें और ऋतुराज वसन्त की शोभा को शुद्धभाव से निरखते हुए और परम प्रभु की रम्य रचना का गुणानुवाद करते हुए वसन्त पञ्चमी के **शेष पृष्ठ 11 पर**

अखंड भारत के सपनों को साकार करने की दिशा में विदेश नीति में अभूतपूर्व परिवर्तन, प्रधानमंत्री की पाक नियंत्रित कश्मीर, बलूचिस्तान व गिलगिट पर ऐतिहासिक घोषणा

हरिकृष्ण निगम

स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का लालकिले की प्राचीर से दिए डेढ़ घंटे के भाषण के बाद किसी भी देशवासी को निस्संदेह एक स्पष्ट संकेत मिल गया कि भारत सरकारी तौर पर सारा पाक-अधिकृत कश्मीर का जिसमें उत्तर में गिलगिट और पाकिस्तान के साथ जम्मू-कश्मीर की वह भू-पट्टी भी शामिल है जो पश्चिम में मीरपुर-मुजफ्फराबाद सेक्टर को जोड़ती है। भारत के इस दावे के साथ-साथ पाक-नियंत्रित कश्मीर की 906 किलोमीटर की लगी अफगान सीमा और शक्सगाम का वह क्षेत्र जो पाकिस्तान ने चीन को 1963 में ही सौंप दिया था भारतीय बदली सीमा के आमने-सामने होगा। इसी तरह चीन का सिंक्चोंग से ग्वादर बन्दरगाह तक का महामार्ग जो बलूचिस्तान से होकर बिलियन डॉलरों की कीमत से चल रही योजना से जोड़ा जा रहा है भारत सरकार अंतर्राष्ट्रीय रणनीतिक विवादों में उलझाने के लिए स्वतंत्र होगी। मोदी ने इस बात का सबसे बड़ा फायदा अप्रत्यक्ष रूप से यह कहकर उठाया है कि पाकिस्तान दुनिया में अकेला देश है जो अपने ही देश के नागरिकों पर वर्षों से वायुसेना द्वारा या ड्रोन हमलों द्वारा उनकी सामूहिक हत्या करने में नहीं हिचकिचाता है। अपने भाषण में नरेन्द्र मोदी ने सार्वजनिक रूप से गिलगिट बलूचिस्तान, मीरपुर, मुजफ्फराबाद व नियंत्रण रेखा के उस पार के जी.बी. ८ और मीरपुर सेक्टर आदि के लोगों को उनके संघर्ष के लिए और उनकी मानवाधिकारों के संरक्षण की प्रतिबद्धता पर संदेश भेजा था। कदाचित आज तक इस्लामाबाद के साथ-साथ स्वयं भारतीय पाक-परस्त पत्रकारों व बुद्धिजीवियों ने ऐसा तमाचा किसी ने पहले न मारा था।

नरेन्द्र मोदी की इस सार्वजनिक घोषणा के पीछे वर्षों पूर्व पाक केबिनेट द्वारा ग्वादर बन्दरगाह को चीन को पचास वर्ष के पट्टे पर सौंपने का निर्णय था। इसके अलावा भारत की नाकेबंदी की पाक-चीन हिन्द महासागर क्षेत्र में एक नई साजिश का दौर भी था जहाँ चीनी अरसे से अपनी उपस्थिति जताने की एक नई रणनीति के तहत नौसेना के अनेक अड्डों के विकास में रुचि ले रहे थे। बलूचिस्तान स्थित खादर के पहले

चरण का निर्माण कार्य मार्च 2002 में शुरू कर 2005 में समाप्त भी हो गया था। जब मार्च 2009 में इसका दूसरा चरण समाप्त हुआ था तब पाकिस्तानी नौ सेना ने यहाँ अपनी पैनी नजर भारत की कच्छ की खाड़ी में स्थित वाडीनार तेल संयंत्रों पर ही नहीं बल्कि देश में आने वाले तेलवाहक सभी जलपोतों पर भी ग्वादर बन्दरगाह में चीन द्वारा स्थापित "इलेक्ट्रानिक लिसेनिंग पोस्ट" द्वारा दूसरी हर गतिविधि को अपने संज्ञा की परिधि में रखा था।

आज तो पाकिस्तान ने ग्वादर बन्दरगाह को औपचारिक रूप से अपने देश की कैबिनेट के अनुमोदन के साथ चीन को सौंपने का निर्णय ले लिया है। भारत के लिए इसके अत्यन्त गम्भीर दूरगामी रणनीतिक परिणाम हो सकते हैं—यह सुरक्षा

पाकिस्तान के ग्वादर होकर हमारे देश में तेल की आपूर्ति की उस पर निर्भरता कई गुना अधिक बढ़ जाएगी।

अब स्वयं पाकिस्तान की इस विषय में घोषित रणनीति की ओर ध्यान दें तो स्पष्ट होगा कि हम उस शत्रु देश के दूरगामी कुटिल मन्तव्य से जानकर भी निर्बोध बनने का नाटक कर रहे हैं। एक समय जनरल परवेज मुशर्रफ ने मार्च सन 2009 में ग्वादर बन्दरगाह के औपचारिक उद्घाटन के समय पाकिस्तानी नौ सेना के एक बड़े का केन्द्र खोलते हुए कहा था—'आज पाकिस्तान के पास किसी भी भावी युद्ध की स्थिति में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण विकल्प है। यदि भारत ने युद्ध के समय कराची की नाकेबंदी की या उसे निशाना बनाया तब भी हमें आवश्यक तेल व पेट्रोलियम

होरमुज जलडमरूमध्य के निकलने के समुद्री मार्ग से मात्र 900 'नाटिकल' मील दूर है जिसके कारण चीनी तेल-पोत पश्चिमी एशिया से लाया कच्चा तेल यहाँ बने टर्मिनल पर उतार सकेगी। इस बन्दरगाह से बनाये जा रहे रेल, सड़क मार्ग व पाइपलाइनों द्वारा एक समय वह आएगा जब चीन को अपनी सामग्री बिना मलक्का व सिंगापुर जलडमरूमध्य की लम्बी यात्रा किए अपने देश में भी भेजना सम्भव होगा और यदि कराची पर भारत ने युद्ध के समय नाकेबंदी की तब वह पाकिस्तान को भी तेल व हथियारों की आपूर्ति के लिए रास्ता देगा।

यदि पश्चिमी एशिया व पाकिस्तान के मानचित्र को बारीकी से देखें तो ज्ञात होगा कि खाड़ी के क्षेत्र में ही विश्व के 75 प्रतिशत तेल के भंडार व 50 प्रतिशत दुनिया के गैस के कुएँ व 'शेल' गैस के उपलब्धि के लिए कार्यरत भंडार हैं। मात्र 'स्ट्रेट ऑफ होरमुज' से ही प्रतिदिन 16 मिलियन बैरल से अधिक लदे तेल के जलपोत निकलते हैं। यह सारा तेल भारतीय सीमा के निकट बलूची समुद्र तट पर स्थित इसी ग्वादर बन्दरगाह से, जैसे ऊपर कहा गया है, मात्र 900 नाटिकल मील दूर पर होरमुज जलडमरूमध्य के मुहाने से गुजरता है। अब पाकिस्तान व चीन की नौसेनाओं की संयुक्त उपस्थिति युद्ध के समय भारत के गले का फंदा बन सकती है। क्या हम इस संभावित आसन्न आपातकाल का सामना करने के लिए समर्थ या सक्षम हैं?

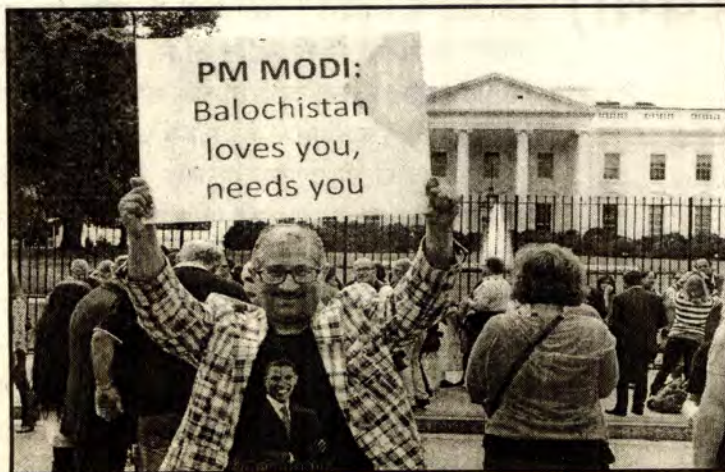
सारे क्षेत्र में हम चीनी इरादों से पहले ही परिचित हैं और किसी बड़े तूफान के आने के पहले की शांति जैसी छाई है। ग्वादर के अलावा वह श्रीलंका में हम्बन्टोटा बन्दरगाह व बंगलादेश व म्यांमार में भी बंदरगाहों की आधुनिक सुविधाएँ देने व निर्माण कार्य में लगा हुआ है। पहले चीन ग्वादर बन्दरगाह सिंगापुर के पी.एस. ए. कारपोरेशन के एक 80 वर्षीय अनुबंध, जो पाक सरकार ने मार्च 2009 में किया था उसी के माध्यम से चलाता था पर अब पाकिस्तान ने इस कम्पनी का अनुबंध रद्द कर कैबिनेट द्वारा चीन समर्पित एक कम्पनी को इसके संचालन की जिम्मेदारी सौंप दी है। आज के परिदृश्य में देश की विशाल तटीय सीमा की सुरक्षा के लिए लगता है कुछ भी नहीं किया

गया है। हम आज भी पूरी तरह सोए हुए हैं, निष्क्रिय हैं। इस चुनौती का सामना करने के लिए भारतीय नौ सेना को क्या चाहिए? जहाँ एक सेवानिवृत्त वाइस-एडमिरल अरुण कुमार सिंह, जो पूर्वी नेवल कमांड, विशाखापटनम के फ्लैग ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ के पद पर रह चुके थे, कहते हैं कि भारतीय नौ सेना को 200 जलयान, युद्धपोत और 500 वायुयानों के साथ कई पनडुब्बियाँ, हिन्द महासागर क्षेत्र पर निगरानी के लिए चाहिए। वहीं एक दूसरे सुरक्षा व शासन ने मात्र एक प्रश्न उठाया है—क्या राजनीतिक नेतृत्व में देश के समुद्र तट की सुरक्षा करने का मनोबल भी है? यदि मनोबल ही न होगा तो हिन्द महासागर क्षेत्र में चीनी उपस्थिति से संतुलन भारत के विरुद्ध ही होना है।

एक दूसरे सुरक्षा विशेषज्ञ ने प्रश्न उठाया है कि यदि ग्वादर बन्दरगाह के निर्माण व विकास के पहले चरण (मार्च 2002 से मार्च 2005 तक) में ही चीन कुल लागत डॉलर 284 मिलियन डॉलर में से डॉलर 96 मिलियन डॉलर लगा सकता है और दूसरे चरण में जो जनवरी 2006 में पूरा हुआ बन्दरगाह की प्रवेश चैनलों को 95 मीटर से अधिक गहरी विशाल जलयान या युद्धपोतों के योग्य बनाने में मुक्त हाथों से कई बिलियन डॉलर खर्च कर सकता है, तो उसके समक्ष भारत के प्रयासों को हास्यास्पद ही कहा जा सकता है। जहाँ ग्वादर बन्दरगाह के अत्याधुनिक राडार व इलेक्ट्रॉनिक गुप्त संवाद श्रवण कक्ष (लिसेनिंग पोस्ट) भारत के सीमावर्ती कच्छ पर भी कड़ी नजर रख सकते हैं, हम उनकी बराबरी करने योग्य नहीं हैं।

जहाँ कश्मीर पर स्वतंत्रता के तुरन्त बाद से सरकार का स्वयं आत्मसंशय बरकरार रहा है आज सात दशकों में पहली बार प्रधानमंत्री के खुले वक्तव्यों ने पाक के निमंत्रण की वैधता को और स्वयं बुद्धिजीवियों की हठधर्मिता और व्याप्त दुराग्रहों को छिन्न-भिन्न कर दिया है। हमारे देश में स्वयं पाकिस्तानी दूरसंचार की मशीनरी के अभिन्न अंग के रूप में अनेक नेता व मीडिया के कर्णधार पनपते रहे थे। पर आज विघटनकारी शक्तियों द्वारा चलाए मस्तिष्क के युद्ध को एक झटके में निरर्थक बना दिया गया है।

शेष पृष्ठ 10 पर



विशेषज्ञों की भी चिन्ता का विषय बन चुका है। कदाचित देश के एक सामान्य नागरिक को यह तथ्य ज्ञात नहीं है कि भारत में तेल का आयात 70 प्रतिशत से अधिक खाड़ी के देशों से टैंकरों द्वारा होरमुज जल डमरूमध्य—'स्ट्रेट ऑफ होरमुज' से होकर ही किया जाता है। इन आयोजित तेल के जलपोतों का 70 प्रतिशत कच्छ की खाड़ी, खम्भात की खाड़ी और मुम्बई के बन्दरगाहों में उतरता है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार पाँच वर्ष पूर्व 2009 में ग्वादर बन्दरगाह होकर कच्छ की खाड़ी से 9900 तेलवाहक जलवान हमारे वहाँ आए थे और आज लगभग 2200 से अधिक तेलवाहक पोत प्रतिवर्ष वहाँ से होकर आ रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार सन 2025 तक यह संख्या बढ़कर पाँच हजार तेल के जलपोतों की हो सकती है। खम्भात और मुम्बई के बन्दरगाहों में आने वाले तेल के जहाजों को यदि जोड़ दिया जाए तब

पदार्थों की अबाध आपूर्ति 'गल्फ ऑफ होरमुज' होकर मिलेगी। पर हम भारत की तेल पर आधारित जीवन रेखा का गला जब चाहे काट सकेंगे। साफ है ग्वादर बन्दरगाह पर भारत की निर्भरता उसे पाकिस्तान की सद्भावना पर ही मिलेगी जिसे उसने हमें पहले ही चेतावनी के द्वारा स्पष्ट कर दिया है।

इसके अलावा वैश्विक राजनीतिक सन्दर्भ में भी पाकिस्तान ने संकेत दे दिया है कि ग्वादर बन्दरगाह के भू-राजनीतिक लाभों के केन्द्र बिन्दु होने से सारे क्षेत्र में लाभ भी मिलेगा। भारत से किसी भावी युद्ध की स्थिति में वह चीनी नौसेना को ग्वादर बन्दरगाह में आमंत्रित कर सकता है। पाकिस्तानी सरकार की इन घोषित नीतियों ने भारत के लिए नए खतरे की घंटी पहले ही बजा दी है। बलूचिस्तान के समुद्र तट पर ईरानी सीमा के निकट स्थित ग्वादर बन्दरगाह

(पिछले अंक का शेष)

धर्म तथा लोग—थाईलैण्ड की लोकसंख्या छह करोड़ दस लाख है। यह सब लोग एक ही वंश अथवा धर्म के नहीं हैं। इनमें से ६२-६३ प्रतिशत बौद्ध, ३-४ प्रतिशत मुसलमान, १ प्रतिशत से भी कम ईसाई और शेष हिन्दू हैं। बौद्ध धर्म वहाँ का राष्ट्रीय धर्म माना जाता है। थायी लोग बौद्ध धर्म के थेरावद पंथ के हैं। पाली भाषा में थेरावद का अर्थ है ज्येष्ठ। थाई लोगों का ऐसा विश्वास है कि उनका, धर्म भारत की मूल बौद्ध परम्परा से संबंधित है। पाली भाषा में उनके धार्मिक ग्रन्थ का नाम विनय पिटाका अथवा टिपिटका है। भारत में बौद्ध धर्म की समाप्ति के बाद उसकी थेरावद परम्परा लंका तथा दक्षिण-पूर्व के देशों में फैली और पनपी।

थायी मन्दिर सुन्दर लगते हैं। उनके छप्परों का विशेष आकार होता है। (गुम्बदाकार तथा उसके ऊपर ऊँचा नुकीला स्तम्भ) उनका रंग भड़कीला होने पर भी आँखों को सुहावना लगता है। मन्दिरों की बनावट में हिन्दू स्थापत्य कला की झलक स्पष्ट दिखाई पड़ती है। मन्दिरों में भगवान बुद्ध की मूर्ति हमेशा पूर्वाभिमुख होती है। मन्दिरों की दीवारों पर भगवान बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित अथवा रामायणकालीन प्रसंगों का चित्रीकरण या नक्काशी होती है। उनके मन्दिर केवल पूजास्थान न होकर उनका सम्बन्ध वहाँ के लोगों के पूर्ण जीवन से होता है। यदि एक स्थान पर अनेक मन्दिर हों, तो उस संकुल को 'वाट' कहते हैं। वाट का अहाता बड़ा होता है और अनेक स्थानों पर वहाँ शंकर, विष्णु, गणपति और त्रिदेव (ब्रह्मा-विष्णु-महेश) की मूर्तियाँ भी देखने को मिलती हैं। कुछ स्थानों पर शंकर भगवान की पिण्डी भी होती है। विशेष बात यह है कि सब स्थानों पर इन मूर्तियों की विधिवत् पूजा होती है। प्रत्येक मन्दिर के अहाते में बरगद जाति का कम से कम एक वृक्ष अवश्य होता है और उसका तना भगवे रंग के वस्त्र से ढँका रहता है। यह वृक्ष बड़ा पवित्र माना जाता है। कारण भारत में भगवान् बुद्ध को इसी जाति के एक वृक्ष के नीचे ज्ञान का साक्षात्कार हुआ था। थाईलैण्ड के सभी राष्ट्रीय त्योहार बौद्ध धर्म से सम्बन्धित हैं। पर बौद्ध धर्म का जन्मस्थान भारत होने के कारण वहाँ के त्योहारों का भारतीय संस्कृति से अटूट

सम्बन्ध है। हिन्दुओं का दीपावली त्योहार बड़े धूमधाम से सार्वजनिक रूप में मनाया जाता है। इसी तरह ईसाई तथा मुस्लिम धर्म के भी प्रमुख त्योहार मनाये जाते हैं।

२४ जून से २८ जून तक हम थाईलैण्ड में थे और वहाँ के दो नगर पट्टाया और बैंकाक देख सके। ये दोनों शहर मध्य थाईलैण्ड के दक्षिणी भाग में स्थित हैं। पट्टाया वहाँ का एक प्रमुख बंदरगाह है। इसका पुराना नाम साताहिप है। वहाँ हमने अलकाझी का नृत्य-संगीत का प्रसिद्ध कार्यक्रम देखा। इसके अतिरिक्त कोरल द्वीप, नांगनूच गाँव, हीरे तराशने का कारखाना, मिनिसियाम आदि अनेक स्थानों का निरीक्षण किया। वहाँ के बाजारों में कपड़े आदि खरीदे। बैंकाक थाईलैण्ड की राजधानी है। यह एक सुन्दर शहर है। इसका पुराना नाम क्रुंगथेप था। यहाँ हमने ड्रीमलैंड, सफारी पार्क, मरीन पार्क का दौरा किया। बैंकाक में अनेक बुद्ध मन्दिर हैं हमने वहाँ के तीन प्रमुख मन्दिर देखे। वाट में बुद्ध भगवान् की लेटी हुई स्थिति में एक विशाल



मूर्ति है। वाट ट्रमिट में बुद्ध भगवान की एक बहुत बड़ी सोने की मूर्ति है। इसके निर्माण में ५,५०० किलो सोना लगा था। वाट बेंचावा बोपिर-यहाँ की सुन्दर मूर्ति संगमरमर की है।

बैंकाक तथा थाईलैण्ड में और भी अनेक प्रेक्षणीय स्थान हैं, जिन्हें देखना मैं इस लेख की दृष्टि से आवश्यक समझता था। उदाहरणार्थ बैंकाक का वाट फ्रा काएओ—यहाँ की बुद्ध मूर्ति पन्ने की बनी है। इस मूर्ति का इतिहास बड़ा रोमांचक है। यह मूर्ति १४३६ में चियांग राई में मिली थी। यहाँ से उसे चियांग माई ले जाया गया। ये दोनों शहर मध्य थाईलैण्ड में हैं। बाद में लाओस का शासक इसे लाओस ले गया। १६वीं सदी में जब थाईलैण्ड ने लाओस पर कब्जा किया, तब उसे फिर बैंकाक

लाया गया। थायी लोगों का ऐसा विश्वास है कि जिसके पास यह मूर्ति होगी, थाईलैण्ड पर उसी का राज्य होगा। बैंकाक में वाट अरुण नाम का एक और प्रेक्षणीय मन्दिर है। यह मन्दिर पैगोडा जैसा लगता है और उसकी ऊँचाई १०४ मी. है। यह मन्दिर अत्यन्त पुरातन—अयोध्या राज्य के समय का है। थाईलैण्ड के लोगों का कहना है कि यदि थाईलैण्ड की संस्कृति का वास्तविक अध्ययन करना हो, तो थाईलैण्ड के उत्तर-पूर्वी यानी आयसान में जाना

हिन्दू संस्कृति की विरासत का अभिमान रखने वाले अहिन्दू देश

पुरुषोत्तम चितले

चाहिए। यह पहले खमेर राज्य का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भाग था। खोरात शहर से दक्षिण-पूर्व दिशा में लगभग ६० किमी. की दूरी पर प्रसात किमाई नामक स्थान पर एक सुन्दर मन्दिर है। यह मन्दिर कम्बोडिया के बाहर

स्थित मन्दिरों में सबसे सुन्दर मन्दिर है। ११वीं-१२वीं सदी में खमेर राज्य की जनता ने हिन्दू धर्म छोड़कर बौद्ध धर्म स्वीकार किया था। खोरात के दक्षिण-पूर्व में कम्बोडिया की सीमा के पास उत्तर में लगभग ४० किमी. अन्तर पर युरिराम प्रान्त में प्रसात नोम रंग नामक सुन्दर मन्दिर है। यह मन्दिर आसपास के प्रदेश से लगभग ३४० मी. ऊँचाई पर एक सुप्त ज्वालामुखी के मुख के पास स्थित है। इस मन्दिर में शंकर तथा विष्णु की अति सुन्दर मूर्तियाँ हैं। आयसान में ऐसे २० मन्दिर आज भी देखे जा सकते हैं। थाईलैण्ड में हिन्दू संस्कृति के अवशेष ढूँढ़ने वाले लोगों के लिए आयसान प्रदेश बड़ा महत्त्वपूर्ण है। थाईलैण्ड के उत्तरी भाग यानी लाना के चियांग माई शहर में १३-१४वीं सदी के अनेक मन्दिर

हैं। सुखोथाई से ६० किमी. पश्चिम की ओर वाट प्रसिरत्न नामक मन्दिर है। यहाँ की बुद्ध मूर्ति संसार की सबसे सुन्दर बुद्ध मूर्ति मानी जाती है।

सिंगापुर—हमारी थाईलैण्ड की यात्रा पूर्ण होने के बाद हम दि. २६ जून को विमान द्वारा सिंगापुर पहुँचे। सिंगापुर एक छोटा सा राष्ट्र, देश, प्रान्त, टापू तथा शहर भी है। यह ब्रह्मदेश के दक्षिण में मलय महाद्वीप के दक्षिण सिरे के पास छोटा—सा टापू है। आसपास के कुछ छोटे-छोटे

टापुओं का भी इस देश में समावेश किया जाता है। इसका क्षेत्रफल केवल ६६० वर्ग किमी. है। इसके उत्तर में मलेशिया का किनारा, पूर्व की ओर चीन का समुद्र और दक्षिण—पश्चिम की ओर मलाक्का का जल—डमरू—मध्य है। इस जल—डमरू—मध्य के दक्षिण—पश्चिम में सुमात्रा द्वीप है। सिंगापुर शहर से बहने वाली उसी नाम की एक नदी है। पहले इस नदी का पानी बहुत गंदा था। १६७७ में इसकी सफाई का काम शुरू हुआ, जो १६८७ में पूरा हुआ। अब इस नदी का पानी पीने के काम आता है। इस स्वच्छ, सुन्दर नदी का उपयोग पर्यटकों का मनोरंजन, नौकायन तथा व्यापार आदि के लिए भी होता है।

सिंगापुर के पुरातन इतिहास की अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। १४वीं सदी तक सिंगापुर टेमासेक नाम से जाना जाता था। यहाँ के लोगों का कहना है कि एक बार पड़ोसी द्वीप सुमात्रा के पॉलेमबग का राजपुत्र—सैगनीला उतामा सिंगापुर में आया था। इस देश में घूमते समय वह एक बड़ी नदी के पास पहुँचा। उस समय उसे किसी प्राणी की गर्जना सुनाई पड़ी और थोड़ी देर बाद गर्जना करने वाला प्राणी भी दिखाई पड़ा। वहाँ उपस्थित लोगों ने राजपुत्र को बताया कि गर्जना करने वाला सिंह है। राजपुत्र सिंह से इतना प्रभावित हुआ कि उसने वहाँ अपना राज्य प्रस्थापित किया और उस भू—प्रदेश का नाम सिंहपुर घोषित किया। यही आज सिंगापुर नदी और सिंगापुर देश

है। राजकुमार ने वहाँ एक किला भी बनाया। जहाँ यह किला था, वह भाग आज भी फोर्ट किंग हिल नाम से जाना जाता है। सिंगापुर में मलय वंश के राजाओं की चार पीढ़ियों ने राज्य किया। पाँचवीं पीढ़ी के राजा का नाम था परमेश्वर। इससे यह स्पष्ट होता है कि वह राजा भारतीय वंश का था। उस समय सुमात्रा द्वीप का उत्तर—पूर्वी भाग श्री विजय साम्राज्य के नाम से प्रसिद्ध था। यह नाम भी भारतीय है। इसके बाद आसपास के टापुओं के

छोटे-छोटे राज्यों ने मिलकर सिंगापुर पर अनेक आक्रमण किये। अंत में परमेश्वर (राजा) को सिंगापुर छोड़कर भागना पड़ा। इसके बाद अनेक सदियों तक सिंगापुर के इतिहास का कोई पता नहीं चलता।

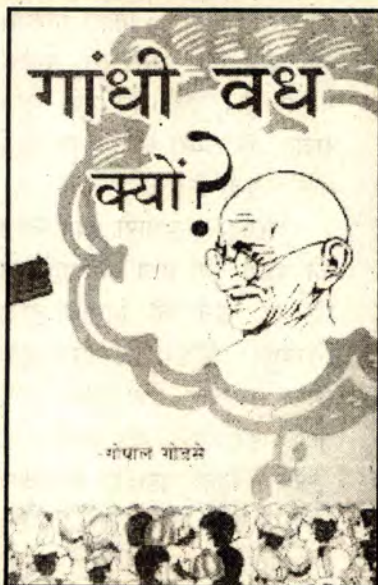
१८१६ में ईस्ट इंडिया कम्पनी का स्टमफोर्ड रेफल्स नामक एक कर्मचारी सिंगापुर आया। उसकी इच्छा सिंगापुर में ईस्ट इंडिया कम्पनी की व्यापारिक सत्ता प्रस्थापित करने की थी। उसी समय से सिंगापुर की आज की बस्तियों का प्रारम्भ हुआ। आज सिंगापुर की जनसंख्या ४० लाख से अधिक है। यह सब लोग एक ही वंश, धर्म तथा संस्कृति के नहीं हैं। उनकी भाषा, लिपि, रीति—रिवाज, त्योहार आदि भिन्न हैं। फिर भी वहाँ के लोगों का एक—दूसरे के प्रति होने वाले प्रेम तथा सामंजस्य की उत्कट भावना देखकर आश्चर्य लगता है। आज सिंगापुर की ४० लाख लोकसंख्या में ७५ प्रतिशत से अधिक लोग चीनी वंश के हैं। १२.५ प्रतिशत मलय वंश के, १० प्रतिशत भारतीय और शेष पेरांकन तथा युरेशियन वंश के हैं। युरेशियन लोगों की संख्या सबसे कम है।

मलयवंश—सिंगापुर में मलय वंश के लोगों की संख्या चीनी लोकसंख्या से कम होते हुए भी उनका प्रभाव चीनी लोगों से कम नहीं है। शायद इसी कारण सिंगापुर का राष्ट्रगीत आज भी मलय भाषा में है। मलय लोग मलेशिया, सुमात्रा, जावा, बोर्नियो, दक्षिण

(पिछले अंक का शेष)

हिरोशिमा पर अणु-बम फेंक एक क्षण में डेढ़ लाख लोगों को मारने वाले राष्ट्र की प्रशंसा करने में आज अपना अहिंसक राष्ट्र व्यस्त है और ऐसा कहा जाता है कि डेढ़ लाख लोग मरे, किन्तु उससे और लक्ष-लक्ष लोग बचे। तो फिर मैं भी वही कहता हूँ कि गांधी जी मारे गए, हम कुछ लोग फाँसी पर चढ़ रहे हैं, बहुतेरे निर्वासित बने, जिनमें आप एक है, किन्तु दया और सत्य के नाम से होने वाला भयानक मानवी नरसंहार तत्काल नियन्त्रण में आया है।

गांधी जी की राष्ट्र-सेवा के लिए, उन्हें शतशः प्रणाम, किन्तु राष्ट्र-सेवा को भी राष्ट्र-विच्छेदन का और राष्ट्र-शत्रु को सहायता देने का अधिकार नहीं पहुँचता है। जिस जनता का यह राष्ट्र है, उसको समझाकर और



विचार-विमर्श से ये प्रश्न सुलझाने होते हैं। कुछ नेताओं ने अंधेरे में कुछ निर्णय लेकर अथवा महात्मा ने उपवास का भय दिखाकर जैसे विचित्र बाधक नीति लोगों पर लादी तो उसका परिणाम जैसे विस्फोट के बिना और क्या होगा? यह पहलु भी दृष्टि से ओझल न हो।

मेरी विनती है कि देश के लक्षावधि अभागे निर्वासित नर-नारियों की हृदय विदारक कथा आप लिखें और विश्व को स्पष्ट कर दें कि इस अमानवीय कृत्य का कारण गांधीवाद है। गांधी जी की चाहे जितना वन्दना करें, किन्तु अपना राष्ट्र फिर कभी गांधीवाद के भंवर में न फँसने दें।

आज गांधीवाद मृत हो रहा है। मेरे मृत्युदण्ड की शिक्षा गांधीवादी अहिंसा का न्याय और राज्य-शासन के क्षेत्र में व्यर्थ सिद्ध कर रहा है।

दया की भीख से मुझे जीवन-दान दिया जाता तो वह मेरी मौत ठहरती, किन्तु मेरा यह स्वर्गारोहण गांधीवाद की मृत्यु है। मैंने अपने इस कृत्य से कोई पाप किया है, ऐसा मुझे तनिक भी नहीं लगा। और इसलिए इस कृत्य के लिए पाप-प्रक्षालन की प्रार्थना करने की कल्पना तक मेरे मन को नहीं छुई, यद्यपि आपने पंचमहापातको की माला मेरे लिए निर्माण की हो तो मुझे आपकी भावनाओं को आघात पहुँचाने की इच्छा नहीं है, किन्तु मैं आपके विचारों को खाय देना चाहता हूँ। पढ़िए, सोचिए और यदि स्वीकार्य न हो, तो उसे फेंक देने के लिए आप स्वच्छंद हैं, किन्तु उसके बाद भी इतना

कहना मैं अवश्य चाहता हूँ कि जिसका अन्तःकरण आपके अन्तःकरण की अपेक्षा तनिक भी कम सहृदय नहीं है और जो पाप जितना ही सुसंस्कृत है, उसने गांधी-वध किया है, इस बात का विश्लेषण आपको करना पड़ेगा।

गांधी जी अमर हैं, किन्तु गांधीवाद मृत्युशय्या पर पड़ा है। थोथापन और भ्रामक तुष्टिकरण के तंत्र के बलि होने के दिन समाप्त होने वाले हैं, बुद्धिवाद के प्रभात काल का उदय हुआ है।

मेरी विनती है, उसे स्वीकार करें। आपके इस कहानी प्रकाशन को सहायता देने वालों को मेरा धन्यवाद कहें। गुरुवर्य अण्णा साहब कर्वे को मेरा अन्तिम विनय प्रणाम अवश्य कहें। और क्या लिखूँ? क्रूर कृत्य करने की प्रेरणा परिस्थिति ने मुझे दी, इसी का केवल खेद होता है। स्वर्गारोहण के प्रसंग में मैं शान्त हूँ।

आपका शुभेच्छु
नथूराम वि० गोडसे
अम्बाला बंदीगृह

१४ नवम्बर, १९४६

लक्षावधि निर्वासितों के

लिए भी यह कहानी अवश्य लिखें। आपकी लेखनी शैलीदार है, अन्तःकरण कोमल है।

नथूराम

समाप्त

आपका

नथूराम

गोडसे

१४ नवम्बर, १९४६

प्रिय माडखोलकर जी!

मेरा अन्तिम प्रमाण स्वीकारना अथवा तिरस्कारना आपका प्रश्न



अखिल भारत हिन्दू
महासभा के वरिष्ठ
नेता, लेखक,

समाजसेवी, राष्ट्रवादी
विचारक व हिन्दी, हिन्दू
एवं हिन्दुस्थान के प्रति
समर्पित श्री इन्द्रदेव
गुलाटी जी (बुलन्दशहर
निवासी) जन्म स्थान
म्यांमार (बर्मा) के ७४वें
जन्मदिवस

(२४ जनवरी १९४३)

की हार्दिक

शुभकामनाएं। आपके
दीर्घायु जीवन की
कामनाओं के साथ
अखिल भारत हिन्दू
महासभा

हिन्दू महासभा भवन,
मंदिर मार्ग, नई
दिल्ली-११०००१

जिला बुलन्दशहर से हिन्दू सभा वार्ता का शुल्क मास दिसम्बर २०१६

- | | | |
|----|--|-------|
| 1. | महेश कुमार अरोरा, ३७/१७, ज्ञान लोक कॉलोनी, गली नं० -२, टीचर्स कॉलोनी रोड़, बुलन्दशहर
(नवीनीकरण शुल्क २०१६-१७) | 150/- |
| 2. | आर्य समाज मन्दिर, आदर्श नगर, नजीबाबाद, (बिजनौर)
(नवीनीकरण शुल्क २०१६-१७) | 150/- |
| 3. | आर्य समाज काँठ, (मुरादाबाद)
(नवीनीकरण शुल्क २०१६-१७) | 150/- |
| 4. | काली चरन आर्य द्वारा, भारत बुक डिपो अन्सारी रोड़, बुलन्दशहर,
(नवीनीकरण शुल्क २०१६-१७) | 150/- |
| 5. | महन्त राम चन्द्र गोस्वामी द्वारा, शिव मन्दिर मुंशी पाड़ा, मालवीय मार्ग, बुलन्दशहर, नवीनीकरण शुल्क २०१६-१७ | 150/- |
| 6. | महेश चन्द विश्वकर्मा, शीट कटिंग वर्क्स १०७, हरीपुरा, मुंशी पाड़ा, बुलन्दशहर,
(नवीनीकरण शुल्क २०१६-१७) | 150/- |

टोटल 900/-

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

जिला बुलन्दशहर से अखिल भारत हिन्दू महासभा को प्राप्त दान सूची मास दिसम्बर २०१६

- | | | |
|-----|---|--------|
| 1. | महेश कुमार अरोरा, बुलन्दशहर
(५२ वीं वर्षगांठ पर दान) | 100/- |
| 2. | जे० एन० जी० की २७ वीं पुण्य तिथि पर दान द्वारा इन्द्रदेव | 200/- |
| 3. | जी० जी० एवं पी० जी० के विवाह की १८वीं वर्ष गांठ पर दान | 101/- |
| 4. | वीर सिंह, ३६४, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर
(६८ वीं वर्षगांठ पर दान) | 251/- |
| 5. | श्री मती पुष्पा रानी, बुलन्दशहर, (पति के ६६वें जन्म दिवस पर दान) | 150/- |
| 6. | मनीष कुमार, बुलन्दशहर, (पापा जी के जन्म दिवस पर दान) | 100/- |
| 7. | ठा० सुरेन्द्र पाल सिंह, १७/१२८, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर (वार्षिक) | 101/- |
| 8. | चेतन कुमार बरनवाल, ३२१, चौक बाजार, बुलन्दशहर, (६८वीं वर्षगांठ पर दान) | 100/- |
| 9. | इन्द्र देव गुलाटी द्वारा, वीर सावरकर पुस्तकालय एवं वाचनालय, १८/१८६, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर, (७४ वीं वर्ष गांठ पर दान) | 1001/- |
| 10. | काली चरन आर्य, बुलन्दशहर, (६६वीं वर्ष गांठ पर दान) | 100/- |

टोटल 2204/-

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

(पिछले अंक का शेष)

अंगुतराप (अंग का उत्तरी भाग) के पल के विवरण से स्पष्ट है कि यह जनविहीन क्षेत्र था। वहां भोजन की उपलब्धि नहीं हो सकती थी। अतः मेंडक श्रेष्ठी ने खिलाने-पिलाने का विशाल आयोजन किया था। वह सर्वथा अज्ञात क्षेत्र था। बुद्ध के आगमन से उस वन का महत्व बढ़ गया। सिंघौल। यह अपने नाम में पुरानी पहचान छिपाए है। सिंह, बुद्ध, धर्म और संघ का प्रतीक था। सम्राट अशोक ने प्रस्तर स्तम्भों पर इस प्रतीक को अंकित कराया था। बौद्ध साहित्य में आपण नाम की व्याख्या में कहा गया है कि इस निगम में २० (बीस) हजार आपणों (दुकानों) के मुंह विभक्त थे। इस प्रकार आपणों (दुकानों) से भरे होने के कारण इस क्षेत्र को आपण नाम से अभिहित किया जाने लगा। वर्तमान में भूइका से लेकर राम श्री नगरी (रामशिर) के ध्वंशावशेषों की खुदाई की जाय तो यह बुद्ध कालीन शहर जो लखीसराय (प्राचीन क्रिमिला जनपद) की ऐतिहासिक धरोहर की जानकारी मिल सकती है। यहां हल्की जुताई के क्रम में १६ लम्बी, ११ इंच चौड़ी तथा पौने तमीन इंच मोटी ईंटे प्राप्त होती है। स्थानीय जन श्रुतियों के अनुसार कोई-कोई इसे अनूप शहर कहते थे। यहां जौहरी बाजार भी था। स्थानीय किंवदन्तियों के अनुसार तेरहवीं शताब्दी में एक भयानक भूकम्प के कारण इस शहर का नाश हुआ। बुद्धचर्या के अनुसार इस निगम से नजदीक नदी तीर पर धनी छाया और रमणीय भूमि भाग वाला वनखंड था। उसी में भगवान विहरते थे। वर्तमान में वृन्दावन और भूइका के बीच के क्षेत्र को निचली वन (बुद्धकालीन निचेलुवन) कहा जाता है। वृन्दावन किउल नदी के तट पर अवस्थित है। बुद्धचर्या का आपण भूइका और निचेलुवन से भौगोलिक स्थितियां मेल खाती है।

'मालती-माधव' एवं 'गृद्ध-कुट' वंशावली पुस्तक के आधार पर कहा जा सकता है कि गिरीश्वर शुक्ल, गिद्ध राज्य के संस्थापक वीर विक्रम सिंह थे, जिन्होंने गिद्धौर राज्य की स्थापना बारहवीं शती के उत्तरार्द्ध में किया। ज्वाला देवी की मूर्ति की स्थापना गिरीश्वर शुक्ल के प्रपौत्र विश्वराम शुक्ल ने तेरहवीं शताब्दी में की। पूर्व में यह बौद्ध तीर्थ स्थल था। ज्वालपा मंदिर के आगे में स्तूपाकार चबुतरा बनाकर भगवान बुद्ध से संबंधित टूटी-फूटी मूर्तियों को सिमेंट से जड़ दिया गया है। ज्वालपा स्थान से उत्तर रामसीर गांव में एक ही चौकोर पत्थर में आठ भगवान बुद्ध विभिन्न मुद्राओं में हैं। रामगढ़चौक अंचल मुख्यालय से ४ कि.मी. द.पू. प्राचीन ऐतिहासिक नन्दनामा गांव है। १६४२ में महापंडित

राहुल सांकृत्यायन ने तीन दिनों तक इस ग्राम में ठहरकर पुरातात्विक सर्वेक्षण किया था। इसकी चर्चा उनकी रचित पुस्तक मेरी जीवन यात्रा भाग-२ में है। उन्होंने अभिलेखों के आधार पर इस ग्राम का नाम नन्दनवन बताया है। उन्होंने यहां एक पुस्तकालय की नींव रखी थी, जो मृत प्राय है।

भगवान बुद्ध की मूर्ति देखी गयी। लई : लई गांव भी बौध कालीन धरोहरों को अपने आगोस में छिपाये हुए है। पहाड़ी से पूर्व दिशा में एक बौद्ध कालीन कुआं देखा गया। एक बुजुर्ग श्री भीम सिंह ने बताया कि, वर्मा (म्यानमार) के पर्यटक द्वारा उन्हें इस बौद्ध कालीन कुएं के बारे में

फीट तथा ऊंचाई ४'-६" देखा गया, जो उरैन निवासी विकास सिंह के पास है, जो एनआईसी लखीसराय के बेबसाईट पर डाला जा चुक है। यह मृदभाड़ पटना म्यूजियम में बुद्ध अस्थिर दीर्घा के बाहर बायी ओर ऊपर में मोहनजोदड़ों के उत्खनन से प्राप्त मृदभाड़ से अधिक कलात्मक, एवं

ननिहाल शाम्हो में था। इस संबंध में राजपत्रित पदाधिकारी संघ के पूर्व राज्याध्यक्ष शाम्हो निवासी श्री रामयज्ञ सिंह एवं पूर्व प्रधानाध्यापक, शिक्षक संघ के नेता सहदेव प्रसाद यादव ने भी इस आलेख के आलेखकों को बताया था कि शाम्हो में गंगा कटाव से पूर्व कई बुद्ध की मूर्तियां एवं टीले

भगवान बुद्ध और क्रिमिला

देवेन्द्र कुमार



वृन्दावन के टीले (विछवे की पहाड़ी) : वृन्दावन के टीले जिस पर १६वें वर्षावास की चर्चा है और जिसकी खुदाई जेनरल कनिंगहम ने कराई थी और उनके द्वारा रही अधूरी खुदाई को बाद में ब्लॉक ने इसे पूरा करवाया था। इसके उत्खनन से प्राप्त सामाग्री कलकते के म्यूजियम में आज भी सुरक्षित है। परिभ्रमण के क्रम में किउल विकास समिति से जुड़े श्री कृष्ण मुरारी यादव साथ थे। इस टीले के अवलोकन में ग्रामीणों ने सम्बेत स्वर में बताया कि तेरह-चौदह वर्षों पूर्व तक उक्त इतिहास वर्णित टीले सुरक्षित था और इस पर खुदाई के गढ़े स्पष्ट रूप से दिखाई देते थे। जिस पर सीढ़ी भी बनी थी। किन्तु तेरह-चौदह वर्षों के बाद इस पहाड़ी (टीले) के सभी पत्थर अवैध उत्खनन के शिकार हो गये।

आपण निगम : आपण निगम के इतिहास से स्थलीय रूप में अबगत होते हुए श्री कार्यानंद सिंह ने श्री कुमार को आपण निगम में २० बीस हजार आपणों से संबंधित प्रमाणित इतिहास से अवगत कराते हुए उस स्थान को रेखांकित करवाया। आपण निगम का अब ध्वंशावशेष ही है। इसकी खुदाई के साथ ही इतिहास के कुछ पन्ने जुड़ सकते हैं।

ज्वालपा स्थान (रामसीर) : ज्वालपा मंदिर के पुजारी श्री गोपाल शुक्ल ने बताया कि यहां देवी की प्राण प्रतिष्ठा उनके पुर्वज द्वारा तेरहवीं शताब्दी में की गई है। मंदिर के आगे में बुद्ध की भग प्रतिमाएं बौद्ध तीर्थ का अवशेष बता रही थी। रामसीर गांव में चौकोर पत्थर में आठ विभिन्न मुद्राओं में

बताया गया था। गांव की गलियों में पहाड़ी पर बने स्तूप के तोड़े गये पिलर के कई टुकड़ों को देखा गया। नाले, के उपर स्तूप के स्तम्भ में भी स्पष्ट रूप से बौद्ध स्तूप की आकृति अंकित है, जो बौद्ध स्तूप होने के लिए साक्ष्य के लिए पर्याप्त है। ग्रामीणों ने बताया कि यहां के हर गलियों में बुद्ध की मूर्ति का पूर्व में मिलना आम बात थी। गांव से कई बौद्ध स्तूपों की सजीवतापूर्ण चित्रण चट्टान पर उत्कीर्ण यह स्तूप की आकृति लगभग २६०० वर्ष पूर्व का है और इसी आकृति को आधार मानकर देश एवं विदेशों में बौद्ध मंदिरों का निर्माण किया गया था। यह उरैन की उत्कृष्ट स्थापत्य कला का द्योतक है और यहां की बनी हुई मूर्तियां देश एवं विदेशों में बौद्ध धर्मावलम्बी ले जाया करते थे। उरैन में आज भी अधूरी निर्माणधीन कतिपय मूर्तियों के अवशेष सुस्पष्ट दृष्टि गोचर होते हैं। लेकिन कालक्रम में बौद्ध संस्कृति का उत्कृष्ट केन्द्र विदेशियों के साजिश का हिस्सा बनता गया। जिस प्रकार अफगानिस्तान की राजधानी काबूल में भगवान बुद्ध की बड़ी-बड़ी प्रतिमाओं को निर्ममता पूर्वक तालिवानियों द्वारा तोड़ा गया, ठीक उसी तरह उरैन में भी उक्त काल में इसकी गौरव गरिमा को समाप्त करने की साजिश की गई। आज भी तोड़ी गई प्रतिमाओं के भग्न चित्र संलग्न है उरैन के इतिहास से संबंधित जानकारी जिसका वर्णन पूर्व में किया जा चुका है, वर्तमान में जीवन्त है। यहां एक मृदूभास पाया गया, जिसकी परिधि १० फीट, गले की परिधि ५

बड़ा है, जो उरैन की महत्ता को स्थापित करने के लिए एवं आगे शोध के लिए एक मार्गदर्शिका स्वरूप है, जो संलग्न चित्र पर द्रष्टव्य है। केवल बौद्ध धर्म के लिए ही नहीं बल्कि जैन धर्म के लिए भी उरैन का उतना ही महत्व है। भगवान महावीर कुण्डग्राम एवं काकंदी नगरी से चम्पानगर जाने के क्रम में उरैन के चैत्य में विश्राम करते थे और इसलिए उरैन के चैत्य का महत्व है। प्रो. ब्रजकिशोर सिंह इसे प्रमाणिक रूप में सत्य मानते हैं।

आधुनिक समय में भी उरैन के कई मुर्धन्य हस्ताक्षरों ने प्रान्त एवं देश स्तर पर ख्याति अर्जित कर न केवल उरैन बल्कि लखीसराय जिले का मान एवं सम्मान बढ़ाया है। ऐसी ही नामी हस्तियों में राज्य के पूर्व पुलिस प्रमुख मो. सैय्यद फजल अहमद साहब का नाम उल्लेखनीय है। इसके साथ ही पंडित नेहरू की कालजयी कृति 'भारत की खोज' सहित अन्य फिल्मों एवं धारावाहिकों में पंडित नेहरू की भूमिका के किरदार के रूप में, विशेष कर हाल में प्रदर्शित 'गांधी' फिल्म में उरैन निवासी जो फजल साहब के परिवार से जुड़े हैं, ख्यातिलब्ध रौशन सेठ उरैन के ही भूमि पुत्र हैं, जिनके उरैन स्थित पैतृक घर का चित्र द्रष्टव्य है।

मुंगेर गजेटियर के पृष्ठ-६५ के आधार पर शाम्हो-बिजुलिया में स्व. फिरंगी सिंह, जिनके पुत्र विश्वेश्वर प्रसाद सिंह जो लखीसराय स्थित के.एस.एस. कॉलेज के संस्थापक प्राचार्य रहे हैं, के बिजुलिया स्थित घर पर, जहां शंभू प्रसाद सिंह, धर्मराज सिंह एवं स्व. पियुष कुमार के अनुज विपुल कुमार, जिनके घर में भगवान बुद्ध की दो खंडित प्रतिमा देखने को मिला। यहां बाबा ब्रह्मदेवता का एक प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ स्थान भी है। गलेटियर के इसी पृष्ठ पर अंकित है कि सन् १९२४-२५ मुंगेर के कलेक्टर के साथ तत्कालिन ब्रिटिश सरकार के मंत्री सर गणेश दत्त के साथ शाम्हो का परिभ्रमण किये थे और वहां ऐसी कई बुद्ध मूर्तियों के उपलब्ध रहने के संबंध में जानकारी मिलने का उल्लेख है। उल्लेख्य है कि सर गणेश दत्त का

थे। मुंगेर गजेटियर भी इस बात की पुष्टि करता है।

पूर्व में उल्लेखित सभी गांवों में द्वारा भगवान बुद्ध से संबंधित मूर्तियां देखी गई और इस संबंध में विद्वानों द्वारा वर्णित बातें, जिसमें लखीसराय के विभिन्न स्थानों पर भगवान बुद्ध के चप्पे-चप्पे पर भारी प्रभाव बताया गया है। हजारों वर्षों के बाद सभी नये-पुराने मंदिरों एवं पिपल के वृक्षों के नीचे आज भी सत्ययता साबित करने के लिए प्रमाण स्वरूप हिन्दू मूर्ति के रूप में सिद्ध के लेप चढ़े मिले पाये जाते हैं। इस क्षेत्र की विशेषता को पटना संग्रहालय में भी देखा जा सकता है। यहां भगवान बुद्ध की ११वीं शताब्दी की पालकालीन मूर्ति बुद्ध दीर्घा में लखीसराय के नाम से निबंधित एवं म्यूजिम के केटलॉग में सुस्पष्ट रूप से अंकित है, जो हवलदार त्रिपाठी सहृदय लिखित 'बौद्ध धर्म और बिहार' में भी इस मूर्ति को चित्र सहित अभय मुद्रावाली अलख जमाती गौतम बुद्ध की मूर्ति के रूप में अंकित किया गया है, जो इससे के तीन जगहों में भगवान बुद्ध की मूर्ति देखी गई, जिसमें एक शिलालेख युक्त थी। इस स्थान को लोग मठ नाम से पुकारते हैं। संभव है कि यह बौद्ध मठ ही रहा हो। डीसी सरकार द्वारा लई ग्राम के परिभ्रमण के क्रम बुद्ध की मूर्तियां एवं शिलालेख देखे गये थे।

पवई : लई ग्राम में स्तूप के तोड़े गये पीलर के कई टुकड़े पवई में उपलब्ध है, जिसे ब्रिटिश काल में किऊल-साहेबगंज बने रेलवे लाइन के पुल संख्या १०५-१०२ तक में लगाए गए पीलर आज भी पुलों के नीचे उसके आधार स्तम्भ में स्पष्ट रूप से सभी पीलर लई स्तूप के ही प्रतीक होते हैं। और उसकी चित्र भी ली गई। पुल के ईर्द-गिर्द आज भी पीलर एवं स्तूप के पत्थर की ईंटे उपलब्ध है। सूर्यगढ़ा के पूर्व कार्यकारी प्रमुख श्री सुजीत कुमार ने भी पुलों के नीचे निर्माण में लगे स्तूप के पीलरों की सम्पुष्टि की। लई के स्तूप का एक पीलर सरपंच श्रीमति रामज्योति के दरबाजे पर पाया गया। उन्होंने बताया कि यह लई पहाड़ी के स्तूप का ही

शेष पृष्ठ 11 पर



कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं



प्रतिष्ठा में,

श्री मुख्तार अब्बास नकवी जी,
माननीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्री,
भारत सरकार,
पर्यावरण भवन, लोधी रोड़, केन्द्रीय
कार्यालय परिसर, नई दिल्ली-११०००३

विषय :- कश्मीर समस्या के समाधान हेतु सुझाव।

महोदय,

नेशनल कॉन्फ्रेंस, कांग्रेस पार्टी, पीडीपी आदि की घोर मुस्लिम तुष्टिकरण की कुटनीति के कारण जम्मू-कश्मीर में हिन्दू अल्पसंख्यकों को जो सुविधाएं मिलनी चाहिए, वे मुसलमानों को दी जा रही हैं। वहां योजनाबद्ध तरीके से हिन्दुओं के अधिकार छीने जा रहे हैं। तथा उन्हें भगाया जा रहा है। इस प्रसंग में भारत सरकार को तत्काल ऐसे सुनिश्चित कदम उठाने चाहिए, जिनसे जम्मू-कश्मीर में हिन्दुओं और बौद्धों को उनके अधिकार मिलें। इन अधिकारों की बहाली के साथ-साथ निर्वासित हिन्दू पंडितों को कश्मीर में पुनः स्थापित करने के प्रयत्नों में तेजी लाई जाना आवश्यक है और उन्हें उनकी संपत्ति भी सुलभ कराई जाना समय की मांग है। जम्मू-कश्मीर को मिले विशेष अधिकार समाप्त किये जायें। एक देश में दो तरह का संविधान स्वीकार्य नहीं है। जम्मू-कश्मीर से बाहर के राज्यों के नागरिकों को भी कश्मीर में संपत्ति खरीदने का अधिकार प्राप्त होना चाहिए। संविधान की धारा-३७० को समाप्त कर जम्मू-कश्मीर को प्रदान विशेष अधिकार तुरंत समाप्त किया जाये। इसके साथ-साथ सीमा पर सेवानिवृत्त सैनिकों को खेती के लिए जमीन, १० लाख रुपये और एक राइफल/पिस्तौल सुलभ कराकर बसाने का कार्य भी देशहित में दूरगामी प्रभाव वाला कार्य सिद्ध होगा। उपर्युक्त संबंध में शीघ्र निर्णय लेने की कृपा करें। इस संबंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,

भवदीय

चन्द्रप्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

वीरेश त्यागी
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

हिन्दूवादी दलों ने मिलकर किया हिन्दू राष्ट्रवादी गठबंधन, गठबंधन उत्तर प्रदेश में २०० विधानसभा क्षेत्रों में प्रत्याशी खड़ा करेगा

नई दिल्ली में अखिल भारत हिन्दू महासभा, जनसंघ पार्टी, शिवसेना हिन्दुस्तान, प्रजा शक्ति पार्टी, किसान विकास पार्टी, भारतीय हिन्दू फौज, हिन्दू रक्षक दल एवं ओजस्वी पार्टी के पदाधिकारियों ने एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया। संवाददाता सम्मेलन को अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं जनसंघ पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जयेंद्र सिंह ने संबोधित करते हुए कहा कि हम लोग उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिये संयुक्त प्रत्याशी खड़ा करेंगे। इन सभी दलों ने मिलकर हिन्दू राष्ट्रवादी गठबंधन का गठन किया है। गठबंधन उत्तर प्रदेश में कम से कम २०० प्रत्याशी खड़ा करेगी। गठबंधन मुख्य रूप से हिन्दू राष्ट्र की स्थापना, हिन्दू, हिन्दी हिन्दुस्तान का विकास, देश के हिन्दुओं के हितों की रक्षा एवं भारतीय संस्कृति व हिन्दू आस्था का संरक्षण व संवर्धन, अयोध्या में भगवान राम के जन्मस्थान पर मंदिर का निर्माण, देश में समान नागरिक कानून बनाने, गौहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने, गौसंरक्षण व संवर्धन, राष्ट्रविरोधी शक्तियों का सर्वनाश, राष्ट्रीय हितों की रक्षा, आतंकवाद को समाप्त करने, किसानों, मजदूरों व युवाओं का कल्याण व सशक्तिकरण, खेती को उद्योग का दर्जा दिलाने, ग्रामीण क्षेत्रों में लघु व कुटीर उद्योग की पुनर्स्थापना, महिलाओं के सम्मान की रक्षा के लिये विशेष कानून बनाने, पूर्ण शराबबंदी लागू करने, पुलिस व्यवस्था में सुधार, शिक्षा स्वास्थ्य व रोजगार सृजन में सुधार, प्राकृतिक संसाधनों के गैरकानूनी खनन व दोहन को रोकने, गंगा और अन्य नदियों का संरक्षण, धारा-३७० को समाप्त करने आदि मुद्दों पर चुनाव लड़ेगी। गठबंधन के प्रत्याशियों की घोषणा शीघ्र की जायेगी।

शेष पृष्ठ 6 का अखंड भारत के सपनों को साकार.....

यदि हम मुड़कर देखें तो पायेंगे कि सन १९४७ में भारत का क्षेत्रफल ३२ लाख ८७ हजार वर्ग किलोमीटर का था, वह सन २०१२ में घटकर ३१ लाख वर्ग किलोमीटर रह गया था अर्थात् ६५ वर्षों में १ लाख ८७ हजार वर्ग किलोमीटर जमीन पर पड़ोसी देशों ने कब्जा कर लिया था। जम्मू कश्मीर के राज्य का लगभग एक तिहाई से अधिक (७० हजार ११४ वर्ग किलोमीटर) क्षेत्र आज भी पाकिस्तान के कब्जे में है जिसे वह आजाद या पाक-नियंत्रित कहता है। सन १९४७-४८ में कबाइली आक्रमणों द्वारा पाकिस्तान द्वारा हथियाया यह क्षेत्र ही कुछ वर्षों पहले भारतीय वार्ताकारों द्वारा भ्रम फैलाकर उन्हें पाक को हस्तांतरित करने की साजिश हुई थी। स्वयं डॉ. मनमोहन सिंह की सरकार में गठित अनौचारिक समूह में दिलीप पाडगांवकर, राजदीप सरदेसाई, अरुन्धती राय जैसे सदस्य थे। पाकिस्तान के आई.एस.आई. द्वारा वित्तपोषित भारत विद्रोही डॉ. गुलाम नबी फई के चंगुल में भारतीयों को घृणित रूप से फांसा गया था। क्योंकि अब मुम्बई के आतंकवादी हांदसे में वे भारत की ओर से 'एप्रूव' बन जाने के कारण दंडित नहीं किये जायेंगे पर उनकी घृणित साजिश को इतिहास अवश्य विस्मृत न करेगा।

जम्मू कश्मीर के अक्साई चिन क्षेत्र में भी ३७,५५५ वर्ग किलोमीटर भूमि पर आज चीन का कब्जा है और पाक द्वारा चीन को हस्तांतरित की गई भूमि का क्षेत्रफल ५१८० वर्ग किलोमीटर है। हमारी प्रारंभ से दुलमुल विदेश नीति के कारण इसके समाधान के पहले संकेत मोदी सरकार द्वारा मिले हैं। यदि पाकिस्तान ने जम्मू कश्मीर क्षेत्र में स्थित वजीरिस्तान और बाल्टिस्तान के क्षेत्रों पर कब्जा न किया होता तो अफगानिस्तान से हमारी सीमा जम्मू-कश्मीर के पश्चिमोत्तर से मिलती। अब वही पाकिस्तान बाल्टिस्तान को ५० साल की लीज या पट्टे पर चीन को सौंपने को जा रहा है। आज पाकिस्तान ग्वादर बन्दरगाह को सुरक्षा, रखरखाव, विकास व चलाने के लिए वर्तमान व्यवस्था जो सिंगापुर की पी.एस.ए. इंटरनेशनल (पोर्ट ऑफ सिंगापुर अथॉरिटी) नामक कम्पनी को सौंप रखी थी उसे चीन की कम्पनी-चाइनीज ओवरसीज पोर्ट होल्डिंग्स पी.एस.ए. ने अनुबंध से बाहर निकलने के आदेश पहले ही दे दिए हैं जिनमें भूमि हस्तांतरण या सुरक्षा के मुद्दे शामिल हैं। पाकिस्तान सरकार ने चीन के इस पहले कदम को स्वीकृति भी दे दी है। सन २०११ में पाकिस्तानी सुरक्षा मंत्री ने अपनी बीजिंग यात्रा के दौरान घोषणा की थी कि इस्लामाबाद चीनी कम्पनी को ग्वादर बन्दरगाह का स्वत्वाधिकार जल्दी सौंप देगा। पर चीन पहले भी इस कारण से हिचकिचाया क्योंकि बलूचिस्तान में हत्याओं का दौर जारी था और राजनीतिक सुरक्षा के मुद्दे पहले ही ज्वलनशील थे विशेषकर क्वेटा आदि नगरों में बलूची पृथकतावादी आन्दोलन द्वारा सारा क्षेत्र मुजाहिरों, नौकरशाही और पाकिस्तानी सेना के लिए विस्फोटक स्थिति का सामना कर रहा था। वे पाकिस्तानी सरकार द्वारा चीनियों के उनकी पारम्परिक जमीन का अधिग्रहण करने की बात भी देशद्रोह मानते थे। अब जगह कि अफगानिस्तान में बदलाव व अमेरिकी सैन्य बलों को हटाए जाने की सम्भावना है, क्वेटा सहित सारा क्षेत्र, जो आज भी तालिबानी नेताओं का गढ़ है फिर से रक्तपात की संभावना बढ़ी है। जब सिंगापुर की पी.एस.ए. अथॉरिटी (पोर्ट ऑफ सिंगापुर प्राधिकरण) इंटरनेशनल ग्वादर बन्दरगाह चलाती थी तब वाणिज्यिक और गुप्त पाकिस्तानी गतिविधियाँ उच्चस्तर पर नहीं थी पर चीन के अब खुलकर स्वयं सामने आने पर पाकिस्तान को विश्वास है सारा निर्माण कार्य रिकार्ड समयमें पूरा करेगा और भारत की क्षेत्र में किसी भी गतिविधि पर अंकुश भी लगाएगा। असली मन्तव्य तो ग्वादर बन्दरगाह को बड़ा नौसैनिक अड्डा बनाना है। सिर्फ हाल की घोषणा कि इस बन्दरगाह में कन्टेनर टर्मिनल से रेल और सड़क मार्ग से बलूचिस्तान के अन्य शहरों को जोड़ा जाएगा, यह दिखावा लगता है। चीन भली-भाँति जानता है कि उसे इस पहल द्वारा गैस व तेल की आपूर्ति भी करनी है। चीन पहले ही श्रीलंका के हम्बन्टोटा बन्दरगाह में प्रवेश कर चुका है और मालदीव में बन्दरगाह बनाने को व्यग्र है। जहाँ अब तक सारी दुनिया उसे व्यावहारिक रूप से भारत के ही प्रभाव व संरक्षण में मानती थी, चीन इस स्थिति को पाकिस्तान के साथ मिलकर बदलना चाहता है। हम पहले से ही जानते हैं कि बांग्लादेश के चटगाँव और काक्स बाजार के निकट चीन बन्दरगाह बनवाने में पूरी सहायता दे रहा है। यद्यपि भारत अपने पड़ोसी देशों से मित्रता का झूठा दावा करता है पर सच तो वे हमारी सुरक्षा को खतरे में डालने का अवसर लगातार खोज रहे हैं।

शायद आज भी बलूचिस्तान और इसकी ४,३३२,००० की जनसंख्या वाली राजधानी क्वेटा का रणनीतिक महत्त्व अमेरिका और चीन से अधिक कोई नहीं समझा था। स्वतंत्रता के पूर्व भारतीयों के लिए यहाँ कोई वितुष्णा या घृणा नहीं थी बल्कि हिन्दू सिख बस्तियाँ यहाँ सामान्य बात थी। पश्चिमी एशिया का एक पहाड़ी व बंजर क्षेत्र के रूप में इससे दक्षिणी पूर्वी ईरान का भी एक भाग जुड़ा था। दक्षिणी पश्चिमी अफगान सीमा का भी इसका एक भाग छूता है। इस सारे क्षेत्र में उर्दू व पंजाबी भाषी मुसलमानों से घृणा ही नहीं बल्कि उन्हें वहाँ से बाहर निकालने का आन्दोलन भी चल रहा है। अमेरिका भली-भाँति जानता है कि पश्चिमी पाकिस्तान का यह प्रांत दक्षिण में अरब सागर से और उत्तर में अफगानिस्तान तथा उत्तर में ईरान से घिरा है। यह विशाल प्रांत है जिसका क्षेत्रफल ३४७,१६० वर्ग किलोमीटर है। यद्यपि जनसंख्या का घनत्व अत्यन्त निम्न है। सन १९५६ के पहले ग्वादर पाकिस्तान में था ही नहीं और उसी साल मस्कट ने उसे अफगानिस्तान को दे दिया था जिसे ईरानी बलूची नहीं मानते थे। क्या हम भूल सकते हैं कि पिछले वर्ष ही पाकिस्तान ने अपने द्वारा नियंत्रित कश्मीर का बाल्टिस्तान जो हिमालय की कराकोरम पर्वत शृंखला में स्थित है चीन को ५० वर्ष के पट्टे (लीज) पर देने की पेशकश की थी, जबकि हम सोए हुए थे। क्या कभी भारत सरकार या पाकिस्तान के हितैषी बुद्धिजीवियों ने भी हमें कभी बताया कि यह वही क्षेत्र है जो माउंट के-२ के दक्षिण में पश्चिमी लद्दाख में स्थित है और हमारे इस विवादित क्षेत्र को चीन को देने का पाकिस्तान को कोई अधिकार ही नहीं है। यहाँ भी तिब्बती मूल की एक मुस्लिम जनजाति रहती है जहाँ अंग्रेजों के समय हिन्दू, सिख, डोगरा, रावत और भोटिया जनसंख्या भी थी। इसका प्रमुख शहर स्कार्डू रहा है जो कभी महाराजा रणजीत सिंह के प्रभुत्व में था तथा बाद में कश्मीर के डोगरा राजाओं का यहाँ नियंत्रण था। क्या हम अपने इतिहास को विस्मृत कर देंगे जब महाराजा रणजीत सिंह (१७८०-१८३९) ने १७९६ में लाहौर जीतकर १८०१ में अपने को महाराजा घोषित किया था। १८०६ में अंग्रेजों ने उन्हें सिख क्षेत्रों पर आगे विजय करने से रोका। फिर भी अफगानों और पठानों को उन्होंने क्रमशः १८२० और १८३० में अपनी प्रशिक्षित सेना से पराजित किया। फिर तो स्वयं अंग्रेजों ने उनके साथ संयुक्त रूप से १८३० में अफगानिस्तान पर आक्रमण करने की योजना बनाई थी। एक ओर जहाँ हमारा देश आधुनिक इतिहास का इतना महत्त्वपूर्ण हिस्सा था लगता है स्वतंत्रता व हर सीमा बनाए रखने के लिए और किसी भी रणनीतिक चाल चलने के लिए पाकिस्तान के विरुद्ध हमें बेहतर नेतृत्व चाहिए। कुछ भी हो देश के ७०वें स्वतंत्रता दिवस पर लालकिले की प्राचीर से दिए अपने भाषण में नरेन्द्र मोदी ने जिस तरह पाक-नियंत्रित कश्मीर, गिलगिट व बलूचिस्तान पर जिस तरह से दो टूक बातें कर उसको स्वयं एक आइना दिखा दिया है वह स्पष्ट रूप से भारत की विदेश नीति में एक बड़े बदलाव की घोषणा है। बिना किसी लीपापोती के यह अखंड भारत की पुरानी माँग को साकार रूप देने का पहला कदम है। बलूचिस्तान के अनसुलझे भविष्य के प्रश्न को हल करने की बात का यह मतलब नहीं है कि वे पाकिस्तान से किसी संवेदनशील संवाद बरकरार रखने में कतराते हैं। अब यह प्रश्न देश की वर्तमान पीढ़ी कैसे सुलझाएगी इसका मार्ग प्रशस्त कर दिया गया है।

शेष पृष्ठ 5 का

बसन्त पंचमी (माघ शुदि पंचमी)....

ऋतुसव को पवित्र रूप में मनाकर उसका आनन्द उठाये। वसन्तोत्सव पर भारत में संगीत का विशेष समारोह होता है किन्तु जनता में श्रृंगारिक गानों का ही अधिक प्रचार है। संगीत से बढ़कर मन और आत्मा का आह्लादक दूसरा पदार्थ नहीं है। सद्भावसमन्वित संगीत से आत्मा का अतीव उत्कर्ष होता है। आर्य समाज ने भव्यभाव भरित गानों का प्रचार तो किया है किन्तु उसके गाने प्रायः संगीत विद्या के विरुद्ध बेसुरे और काव्य रस से शून्य पाये जाते हैं। आर्य महाशयों को इस दोष का परिमार्जन शीघ्र करना चाहिए। वसन्त आदि उत्सव संगीत और काव्यकला की उन्नति के लिए उपयुक्त और उत्तम अवसर हो सकते हैं। इन पर्वों पर आर्य जनता में कवितामय सुन्दर संगीत की परिपाटी प्रचलित करनी चाहिए। संगीत का सुधार भी सुधारकशिरोमणि आर्य समाज से ही संभव है।

शेष पृष्ठ 7 का

हिन्दू संस्कृति की विरासत का.....

थाईलैण्ड आदि भागों के मूल निवासी हैं। बहुतांश मलय मुसलमान धर्म के अनुयायी हैं। पर वहाँ इस बात के चिह्न मिलते हैं कि उनका कभी हिन्दू धर्म से भी निकट का सम्बन्ध था। १६३० तक उनकी भाषा में संस्कृत भाषा के शब्दों का समावेश किया जाता था। उनके नाम हिन्दुओं जैसे होते थे और कुछ नाम आज भी अपभ्रंश रूप में हिन्दू नाम ही हैं। कुछ मलय लोगों के नामों में नीला, उत्तमा, सरिता, परमेश्वर, श्री जैसे शब्दों का या उनके अपभ्रंश रूप का प्रयोग होता है। उनकी लोककथाओं, लोकगीत तथा लोकनाट्यों में तो हिन्दू नामों की भरमार होती है। ऐसा उल्लेख मिलता है कि सिंगापुर का राजा परमेश्वर सिंगापुर छोड़ने के बाद मलय देश में आया और उसने वहाँ अपना राज्य प्रस्थापित किया। बाद में मुस्लिम धर्म की लहर के समय वहाँ के लोगों ने मुसलमान धर्म अपनाया।

शेष पृष्ठ 1 का

सियाचिन ब्रेवहार्ट शहीद लांस.....

मूल के फ्रॉन्सिस बूचर बतौर सेना प्रमुख थे। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि लांस नायक हनुमंथप्प जैसे बहादुर सैनिकों पर देश को गर्व है। भारतीय सैनिक दुनिया में सर्वश्रेष्ठ है।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलती

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथक्तावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अन्तर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहाँ निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिले।

केवल इतना ही नहीं, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।

आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....	150/- रुपये
द्विवार्षिक.....	300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....	1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

"हिन्दू सभा वार्ता" के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय बैंक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 9 का

भगवान बुद्ध और क्रिमिला.....

पीलर है, जो रेलवे पुल में प्रयोग किया गया था। एक स्थान पर भगवान बुद्ध की बहुत सी टूटी-फुटी मूर्तियों के साथ-साथ चार जैन तीर्थंकरों की संयुक्त मूर्ति देखी गई। अर्जुन पाण्डे के घर में आंशिक खंडित मूर्ति देखा गया।

बेलथुआ : यहां तालाब के किनारे भगवान बुद्ध की महापरिनिर्वाण की एक शिलालेख युक्त मूर्ति देखी गई। यहां एक चतुर्मुख शिवलिंग देखा गया।

पोखरामा : इसका प्राचीन नाम पुष्कर ग्राम है। ग्रामीणों ने बताया कि सूर्य मंदिर के समीप दुःखभंजन स्थान की सभी बौद्ध मूर्तियां यहां दुर्गा मंदिर बनाने के नीव में डाल दी गई हैं। गांव के ठाकुरबाड़ी में पेड़ के नीचे भगवान बुद्ध से संबंधित मूर्तियां देखी गई। गांव से उत्तर तालाब के बांध पर दो जगह बौद्धकालीन मूर्तियां देखी गई।

तेसझा : राजस्व थाना सूर्यगढ़ा के थाना नं. ३६ में अतिप्राचीन टीला जो लगभग ५० एकड़ में फैला हुआ है। इसे स्थानीय लोग महाभारतकालीन बताते हैं। इस पुरातात्विक स्थल के उत्खनन एवं शोध की आवश्यकता है।

घुड़दौड़ : यह बुद्धौली बनकर मौजा के अंतर्गत पड़ता है। यहां प्राचीन किले के अवशेष हैं। यह घने सुदूर जंगल में है। इस पुरातात्विक स्थल के शोध हेतु खुदाई की आवश्यकता है।

उनैन : उरैन की पहाड़ी के सबसे उपरी छोर पर बौद्धमठ स्तूप या बौद्ध बिहार होने का स्पष्ट अवशेष आज भी मौजूद है किन्तु एक सोची-समझी राजनीति के तहत इन स्तूपों को नष्ट किया गया ताकि भगवान बुद्ध से जुड़ी विरासत को लोग नहीं जान पाए। जैसाकि उरैन के बौद्ध कालीन इतिहास के संबंध में पूर्व में ही इसके महत्वपूर्ण तथ्यों को रेखांकित किया जा चुका है और उसी परिप्रेक्ष्य में जेनरल कनिंगहम, ब्लॉक, वैडल, डीसी सरकार, के.के. दत्त प्रो. राधाकृष्ण चौधरी एवं प्रो. राम रघुवीर जैसे उद्भट विद्वान इतिहासकारों ने उरैन का भ्रमण कर इसकी ऐतिहासिकता को स्वीकार किया था। आज भी इस पहाड़ी पर जहां भगवान बुद्ध के स्तूप के अवशेष हैं के अवलोकन से एक विहंगम दृश्य की अनुभूति होती है। लगता है कि इस पहाड़ी के चप्पे-चप्पे पर आज भी उनकी छाया विराजमान है। पहाड़ी पर रेखाचित्रों के माध्यम संबंधित संलग्न छायाचित्र पर देखा जा सकता है। सम्पूर्ण क्रिमिला-लखीसराय का क्षेत्र बुद्ध शरण गच्छामि, संघं शरण गच्छामि, धम्मं शरण गच्छामि के उपदेश से था किन्तु सही खोज एवं शोध के अभाव में देश, प्रान्त एवं दुनिया के अन्य बौद्धिक केन्द्रों की भांति प्राचीन क्षेत्र वर्तमान में ख्याति से आजल हैं। आवश्यकता है इन बौद्धिक ग्रामों-स्थानों को देश-दुनिया के लिए धरातलीय शोध एवं आधारभूत संरचना का विकास कर लोगों के सामने पर्यटन केन्द्र के रूप प्रयास को और आगे बढ़ाते हुए वर्तमान जिला प्रशासन की इस दिशा में सकारात्मक भूमिका एवं बुद्ध के रुझान के आलोक में क्रिमिला का यह वर्तमान लखीसराय क्षेत्र बुद्धिष्ट सर्किट के रूप में चिन्हित होकर दुनिया में स्वीकार्य होंगे और तभी स्मारिका प्रकाशन का यथार्थ फलीभूत होगा।

शेष पृष्ठ 4 का

प्याज पहचाने कैंसर....

हजारों गुना लाभ मिलने की संभावना है। मौजूदा थैरेपी से कैंसर सेल के अगल-बगल की कोशिकाओं को भी नुकसान होता है। लेकिन, सीएनसी के बाद फोटो डायनेमिक थैरेपी से सिर्फ वही कोशिका नष्ट होती है। प्रिसिपल कोऑर्डिनेट, प्रो. आलिम एच. नकवी ने बताया कि प्याज से सिल्वर नैनो क्लस्टर बनाने में कामयाबी मिली है। पेटेंट भी करा लिया है। इसका कोई साइड इफैक्ट भी नहीं है। कैंसर के इलाज में हमारा फार्मूला क्रांतिकारी साबित हो सकता है। शोध टीम के सदस्य डॉ. ब्रजराज सिंह ने कहा कि हमारा फार्मूला प्राकृतिक है। कैंसर कोशिकाओं की पहचान और इलाज में इसका बड़ा लाभ मिलने की उम्मीद है। इसका बड़े स्तर पर प्रयोग चल रहा है।

शेष पृष्ठ 1 का

जलीकट्ट पर प्रतिबंध लगाने के...

का एक महत्वपूर्ण पर्व है। इसमें जानवरों की पूजा की जाती है। इसलिये जलीकट्ट पर लगे प्रतिबंध को तुरन्त हटाया जाये। जयभगवान गोयल ने कहा कि यूनाइटेड हिन्दू फ्रंट तब तक आंदोलन जारी रखेगी, जब तक कि जलीकट्ट से प्रतिबंध हट नहीं जाता है।

दिनांक 08 फरवरी से 14 फरवरी 2017 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
पूर्णिमा	10 फरवरी	शुक्रवार
द्वितीया	12 फरवरी	रविवार
चतुर्थी	14 फरवरी	मंगलवार

12

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

निष्कर्ष

दिनांक 01 फरवरी से 07 फरवरी 2017 तक

यह भी सच है

नेताजी सुभाष बोस जी की कुर्बानी को याद करो!

“तुम मुझे खून दो” मैं तुम्हें आजादी दूंगा” यह अनमोल राष्ट्रीय चेतना भरे शब्द भारत मां के वीर सपूत, क्रांतिकारी, देशभक्त, महापुरुष, नेताजी सुभाष चंद बोस ने देश की आजादी की लड़ाई के दौरान देशवासियों को सम्बोधित करते हुये कहे! देश की आजादी की लड़ाई में नेताजी सुभाष चंद बोस की यह राष्ट्रीय चेतना भरी गूँज का गुलाम भारत देशवासियों पर बहुत प्रभाव पड़ा जिससे देश में क्रांति की लहर दौड़ पड़ी। क्रांति की लहर ने नेताजी सुभाष बोस को व उनको सहयोगियों के साथ ब्रिटिश शासन को गुलाम भारत को स्वतन्त्र करवाने पर मजबूर कर दिया। नेताजी सुभाष बोस व उनके सहयोगियों ने ब्रिटिश शासन की जड़े आजादी की लड़ाई में हिलाकर रख दी। जिससे देश आजाद हुआ व जिनकी बदौलत आज हम सब करोड़ों भारत देशवासी विदेशी पराधीनता से मुक्ति पाकर खुले आसमान के नीचे सुख व चैन की सांस लेकर जी रहे हैं। आज 23 जनवरी को इस महान आत्मा नेता जी सुभाष बोस की जयन्ती है। जिन्होंने देश की आजादी की खातिर अपने अमूल्य जीवन को न्यौछावर कर दिया था। काश कि आज नेता जी सुभाष बोस व उनके सहयोगी आजाद भारत देश की सत्ता पर विराजमान होते तो अखण्ड भारत देश की दशा व दिशा कुछ और ही होती। हम सब को आज देश की गंभीर आन्तरिक व बाहरी दशा देखने को नहीं मिलती। आईये हम सब देशवासी नेता जी सुभाष चंद बोस की जयन्ती सामाजिक, व राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाये। अपने बच्चों व देश की युवा पीढ़ी सुशिक्षित, चरित्रवान, को नेताजी सुभाष चंद बोस की आदर्शवादी जीवन चरित्र से प्रेरणा देकर राष्ट्रवादी, व देशभक्त अखण्ड आमवंत देश की वीर सिपाही बनाये। मेरा हिन्दू सभा वार्ता (पाक्षिक) पत्र के माध्यम से देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से अनुरोध है। कि भारत माँ के वीर सपूत, क्रांतिकारी, देशभक्त, महान नेता, नेताजी सुभाष चंद बोस की जयन्ती हर वर्ष 23 जनवरी को राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाने के लिये अविलम्ब अधिसूचना जारी करके राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया जाये तथा पूरे देश में स्कूलों, कालेजों विश्वविद्यालयों, धार्मिक संस्थानों, सामाजिक व राजनैतिक संगठनों द्वारा देश के कोने कोने में सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा नेताजी सुभाष चंद बोस जी के जीवन चरित्र को दर्शा करके राष्ट्रीय चेतना व देशभक्ति की भावना को उजागर किया जाना चाहिए। आज वक्त की जबरदस्त पुकार है। याद रखे के नेताजी सुभाष बोस जी के प्रति तभी सार्थक राष्ट्रीय सम्मान सिद्ध होगा जब हम सब भारत देशवासी उनके आदर्शवादी जीवन चरित्र से प्रेरणा लेकर समाज, देश व हिन्दू राष्ट्र की रक्षा करेंगे तथा सत्तादल प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सरकार के साथ भरपूर सहयोग करेंगे।

देश बन्धु

आतंक, कानून और न्याय

राष्ट्रद्रोहियों व आतंकियों जिन्होंने बिना कारण सैकड़ों निर्दोषों की बम विस्फोटों से लाशें बिछा दी हो तो उनको पुलिस, सुरक्षाबलों या सामान्य नागरिकों द्वारा मारना कोई अन्याय नहीं है। कानून न्याय की रक्षा के लिए ही बनाये जाते हैं। परंतु जब कानून लंबे समय तक शिथिल प्रक्रिया के कारण शीघ्र निर्णय लेने में समर्थ न हो तो समाज कब तक अपनी व राष्ट्र की सुरक्षा के लिए प्रतीक्षा करेगा? इसलिए आतंकवाद जो कि एक छद्म युद्ध है जिसमें आतंकियों के कोई नियम व कानून नहीं होते और न ही कोई बंधन होता तो ऐसे में उनको उन्ही की भाषा में समझाना अनुचित नहीं। वैसे भी कानून मौलिक व मानवीय अधिकारों की रक्षा के लिए ही होते हैं। अतः जब कानून अपरिहार्य कारणों से असमर्थ है तो क्या आतंकियों को जेलों से भागने या उनको किसी हवाई जहाज आदि को हाईजैक करके छुड़वाने के अवसर देना उचित है? जैसा की पूर्व में जैश-ए-मोहम्मद के दुर्दान्त आतंकी अजहर मसूद व दो अन्य को IC-814 प्लेन हाईजैक (दिसम्बर 1999 में) होने पर छोड़ा गया था। इसके अतिरिक्त जेलों में वर्षों से बंद आतंकियों पर निरंतर होने वाले व्यय की भी कोई सीमा नहीं होने के कारण देश पर भारी आर्थिक बोझ ही बढ़ता है। साथ ही आतंक के विरुद्ध कठोर कार्यवाही भी सुस्त हो जाती है। अतः देशद्रोहियों व आतंकवादियों के लिए जब तक कठोर कानून नहीं बनेंगे और उनका प्राथमिकता के आधार पर पालन नहीं होगा तब तक देश में न्याय की रक्षा के लिए और आतंकवाद को मिटाने के लिए मुठभेड़ों का सहारा लेना होगा। क्योंकि न्याय एक स्वतंत्र तत्व है न कि दोषपूर्ण कानूनों का गुलाम। अगर कानून सोता है तो न्याय को जगाना ही होगा।

विनोद कुमार सर्वोदय

कबिरा खड़ा बजार में

आखिर इतनी
लापरवाही क्यों?

धार्मिक आयोजनों में प्रशासनिक बदइतजामी और जनता की लापरवाही से एक बार फिर दो गंभीर हादसे हो गए। मकर संक्रांति पर बिहार की राजधानी पटना में 28 लोगों की डूबने से मौत हो गई, जबकि प.बंगाल में तीर्थस्थल गंगासागर में भगदड़ के कारण 6 लोगों की मौत हुई और कई घायल हो गए हैं। बिहार में हाल ही में प्रकाश पर्व मनाया गया था, जिसमें देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु जुटे थे। उस वक्त जिस तरह का इंतजाम किया गया और समूचा आयोजन निर्विघ्न संपन्न हुआ, उसकी प्रशंसा हर ओर हुई। पटना के सबलपुर दियारे में बिहार सरकार के पर्यटन विभाग ने पतंगबाजी महोत्सव का आयोजन किया था। खूब जोर-शोर से इसका प्रचार हुआ और भारी भीड़ इस उत्सव का आनंद लेने के लिए पहुंची। लेकिन इतने सारे लोगों को संभालने और अनुशासित रखने के लिए जो इंतजाम किए जाने थे, उसमें प्रशासनिक लापरवाही नजर आई। प्रशासन की ओर से न पर्याप्त नावों का इंतजाम था कि लोग एक किनारे से दूसरे किनारे तक पहुंचते, न पुलिस बल तैनात था कि भीड़ नियंत्रित रखते, न चिकित्सीय सहायता की व्यवस्था थी। यही नहीं, इसके साथ ही बिना मंजूरी के निजी संचालक नाव चलाते रहे और किसी ने उस पर रोक लगाने की जहमत नहीं उठाई। खबर यह भी है कि सबलपुर दियारा के पास ही एक मनोरंजन पार्क भी चल रहा है, जो बिना सरकारी अनुमति के ही बनाया गया है और धड़ल्ले से चल भी रहा है। लोगों की आवाजाही इस पार्क में भी बनी हुई थी। बहरहाल प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक नाव डूबने का हादसा तब हुआ, जब किनारे जाने के लिए एक नाव में क्षमता से अधिक लोग सवार हो गए। दुर्घटना में बचने वाले और तीन लोगों की जान बचाने वाले सुमन कुमार ने बताया कि पर्यटन सचिव हरजोत कौर के आयोजन से निकलने के बाद उद्घोषणा हुई कि सरकारी नावें 8 बजे के बाद नहीं चलेंगी। इससे लोगों में किनारे पहुंचने की अफरा-तफरी मच गई। सरकारी नावें 3 बजे तक ही चलीं। दियारा में उस वक्त 7 हजार से अधिक लोग मौजूद थे। शाम साढ़े पांच के करीब एक छोटी नाव लोगों ने देखी, जो केवल 25 लोगों को ले जा सकती थी। लेकिन उसमें लोग चढ़ते गए और उन्हें रोकने वाला कोई नहीं था। लिहाजा थोड़ी दूर जाने के बाद ही नाव डूबने लगी। सुमन और उसके साथियों ने कूद कर अपनी जान बचाई, साथ ही कुछ और लोगों की मदद भी की। स्पष्ट है कि इस घटना के लिए प्रशासनिक अनदेखी, बदइतजामी जिम्मेदार है ही, लोगों का रवैया भी लापरवाह रहा। पटना में इससे पहले 2012 में छठ पर्व और 2014 में दशहरे पर इसी किस्म की अव्यवस्था और अनियंत्रण से गंभीर दुर्घटनाएं हुई हैं। इसके बावजूद अगर सरकार सचेत नहीं हो रही, तो यह दुखद है। पटना की इस दुर्घटना में एक और चिंताजनक पहलू का खुलासा हुआ है कि सरकार की ओर से गोताखोरों को समुचित धनराशि नहीं दी जाती। सरकार पर गोताखोरों का साढ़े तीन लाख बकाया भी है, जिसे पाने का इंतजार गोताखोर कर रहे हैं। जिस काम में इतना जोखिम है, उसके लिए इतनी कम कीमत क्या उचित है, यह सरकार को सोचना चाहिए। विचार का विषय यह भी है कि सरकार के आपदा प्रबंधन के इंतजाम इतने लचर क्यों हैं।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)-11/6129/2016-17-18

प्रत्येक
नई दिल्लीसाप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

रजि सं. 29007/77

दिनांक 01 फरवरी से 07 फरवरी 2017 तक

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।